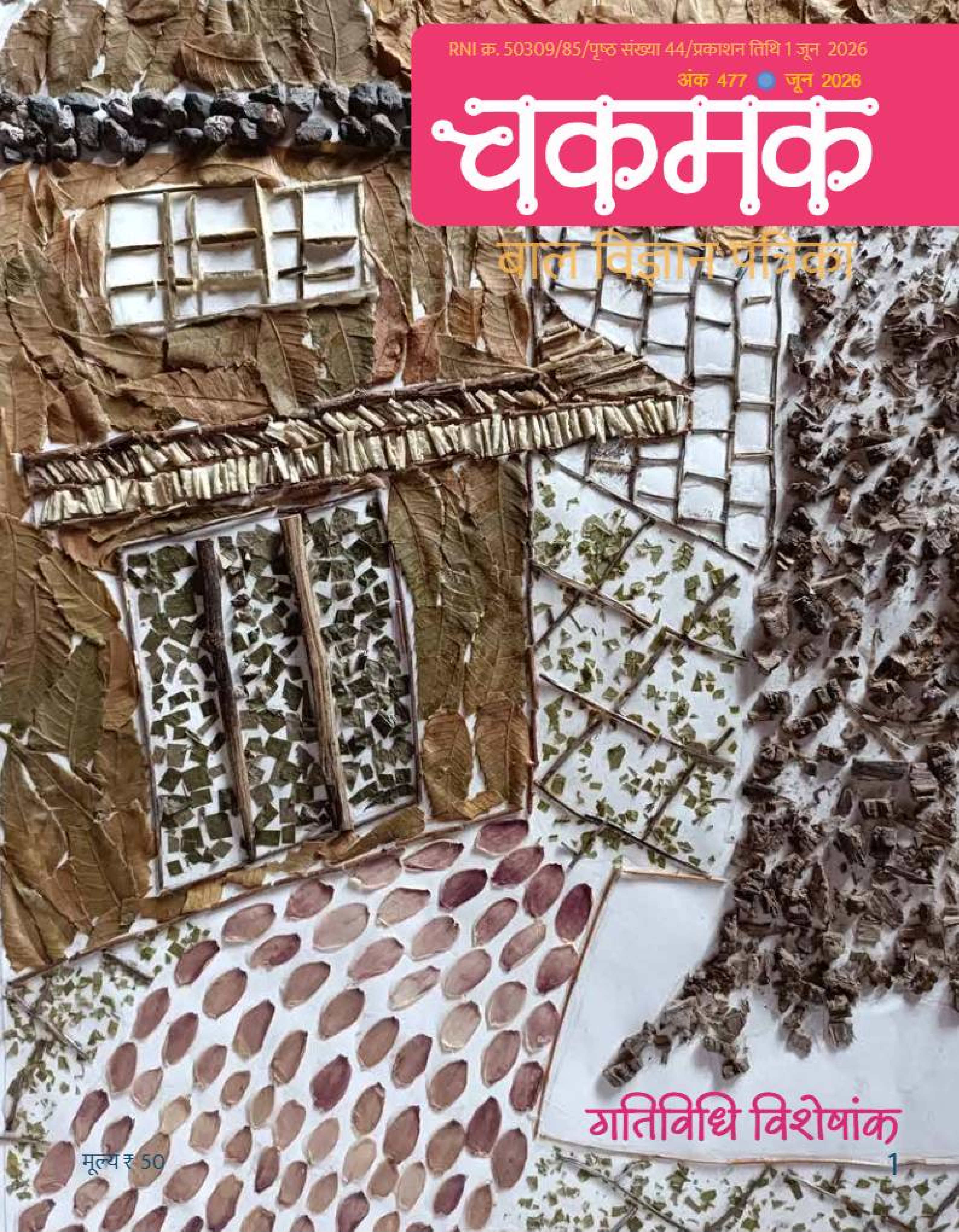

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जून 2026

अंक 477 जून 2026

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

गतिविधि विशेषांक

मूल्य ₹ 50

प्रिय दोस्तो,

जून का यह अंक हमने गर्मी की छुट्टियों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया है। मौसम या फिर अन्य किसी वजह से तुम अगर घर में कैद हो तो यह अंक तुम्हें बोरियत से ज़रूर बचा सकता है। यह हमारा गर्मी का विशेषांक है। इस अंक में तुम्हारे लिए तरह-तरह की गतिविधियाँ हैं। 'तुम भी बनाओ', 'माथापच्ची', 'पहेलियाँ', 'तुम भी जानो', 'चित्रपहेली', 'अन्तर ढूँढो', 'भूलभुलैया' जैसे नियमित कॉलम तो तुम्हें इस अंक में मिलेंगे ही। लेकिन फर्क यह है कि इस बार गतिविधियों वाले पन्ने ज़्यादा हैं। साथ ही कुछ नई गतिविधियाँ भी हैं। ज़्यादातर गतिविधियाँ तुम घर में रहकर और आसपास की चीज़ों से कर सकते हो। हाँ, एक-दो गतिविधियों के लिए तुम्हें बाहर थोड़ा समय बिताना पड़ेगा। ध्यान रखना कि इन्हें सुबह-सुबह या फिर देर शाम में करना।

इस अंक से हम 'क्यों-क्यों' कॉलम में एक बदलाव कर रहे हैं। कई पाठकों का कहना है कि 'क्यों-क्यों' में दिए सवाल का जवाब भेजने के लिए उन्हें कम समय मिलता है। इसलिए अब 'क्यों-क्यों' का सवाल एक अंक पहले दिया जाएगा। इससे तुम्हें जवाब भेजने के लिए ज़्यादा समय मिलेगा और हमें भी ज़्यादा जवाबों पर विचार करने का मौका मिलेगा। इसलिए जून के इस अंक में अगस्त माह का 'क्यों-क्यों' सवाल दिया गया है।"

उम्मीद है कि तुम्हें यह विशेषांक पसन्द आएगा। गर्मी की छुट्टियों के अनुभव हमें ज़रूर लिखकर बताना और यह भी बताना कि यह विशेषांक तुम्हें कैसा लगा।

ढेर सारे प्यार के साथ,
तुम्हारी
चकमक

गतिविधि विशेषांक

इस बार

अन्तर ढूँढो	4
तीलियों की तिकड़म	4
भूलभुलैया	5
तुम भी बनाओ: रंग-बिरंगे आर्ट वर्क... कनक शशि अनिल	6
चित्रपहेली 1	7
उठो, दामरी उठो! पंकज सइकिया	8
शरारत वीरेन्द्र दुबे	12
नारियल से कलाकारी विष्णु चिंचालकर	12
माथापच्ची	12
शिकाकु कविता तिवारी	13

अंक 477 जून 2026

चकमक

कोयल के गीत
नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन 14

तुम भी बनाओ: प्रोजेक्टर
प्रभाकर डबराल 16

ज़ेन कथा - शुरुआत और अन्त 17

तुम भी जानो 17

मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 22
आर एस रेश्नू राज, ए पी माधवन व साथी 18

तुम भी जानो 19

क्यों-क्यों 20

माथापच्ची 24

तुम भी बनाओ: मोबाइल फोन स्टैंड
रक्षिता सैनी 26

शहरों में घोंसला बनाते पक्षी
जितेश शेल्के 26

चित्रपहेली 2 28

तुम भी बनाओ: लोमड़ी 30

माथापच्ची 30

अन्तर ढूँढो 31

चित्रकला के इर्द-गिर्द - 3
सी. एन. सुब्रह्मण्यम् 32

चित्रपहेली 3 34

तुम भी जानो 34

तुम भी बनाओ: पत्तों के स्टैम्प
कनक शशि अनिल 35

माथापच्ची 35

मेरा पन्ना 36

भूलभुलैया 44

आवरण चित्र: शाम्भवी निंबालकर, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

सम्पादक
विनता विश्वनाथन
कनक शशि अनिल

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिज़ाइन
कनक शशि अनिल

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता: स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर: 10107770248
IFSC कोड: SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

अन्तर ढूँढो

एक जैसे दिखने वाले इन दोनों चित्रों में दस अन्तर हैं, तुमने कितने ढूँढे?

चित्र: नरेश पासवान

तीलियों की तिकड़म

1. तीन तीलियों को इधर-उधर करके दिए गए तीन चौकोर से पाँच चौकोर बनाओ।

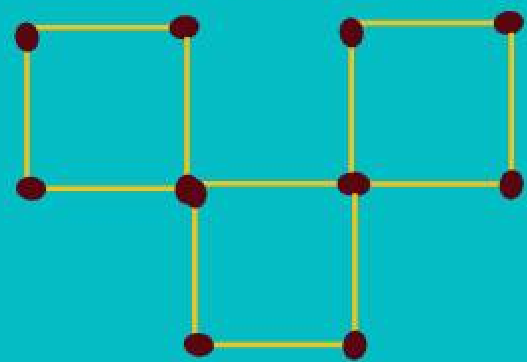

2. चार तीलियों को इधर-उधर करके छह त्रिभुज बनाओ।

3. चार तीलियों को इधर-उधर करके दस चौकोर बनाओ।

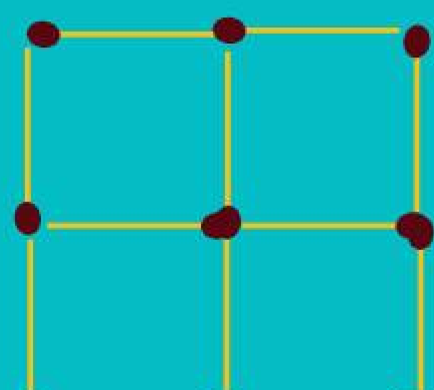

जवाब पेज 42-43 पर

चित्र: नरेश पासवान

तुम भी बनाओ

रंग-बिरंगे आर्ट वर्क और खा जाओ !!

कनक शशि अनिल

आटा, कद्दूकस, इमामदस्ता, हल्दी, चुकन्दर, नींबू, गाजर, पालक और जामुन का गूदा।

गाजर और चुकन्दर को छीलकर कद्दूकस कर लो। पालक को बारीक काट लो। इन्हें इमामदस्ते में अलग-अलग पीसकर चटनी बना लो। अगर तुम्हारे पास जामुन हो तो उसका गूदा (पल्प) निकाल लो।

अब 2-3 चम्मच हल्दी को आधी कटोरी पानी में घोलो और इसमें आधा नींबू निचोड़ लो। नींबू से हल्दी का रंग थोड़ा चटक पीला हो जाएगा।

गाजर, चुकन्दर, पालक, हल्दी और जामुन के पेस्ट को आटे में अलग-अलग मिलाओ। फिर थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए आटा गूँथ लो। आखिर में थोड़ा-सा तेल लगाकर इन्हें कुछ देर ढँककर रख दो।

अब तुम्हारे पास 5 रंगों के आटे तैयार हो जाएँगे।

इन आटों से तुम अलग-अलग आकार व पैटर्न बनाओ। तुम इसे बेलन से बेल सकते हो या हाथ से भी बना सकते हो। चोटी, चटाई, फूल-पत्तियाँ, तितलियाँ, गोल-गोल पूरियाँ या कोई भी और आकार बना लो।

जब तुम्हारे ये रंगीन आर्ट वर्क तैयार हो जाएँ तो किसी बड़े व्यक्ति की मदद से इन्हें सावधानी से गर्म तेल में तल लो। तलने पर इनका रंग थोड़ा बदल जाएगा।

बस फिर अपने दोस्तों व परिवारवालों के साथ पार्टी करो! और हाँ, हमें इनकी फोटो भेजना मत भूलना।

चित्रपहेली 1

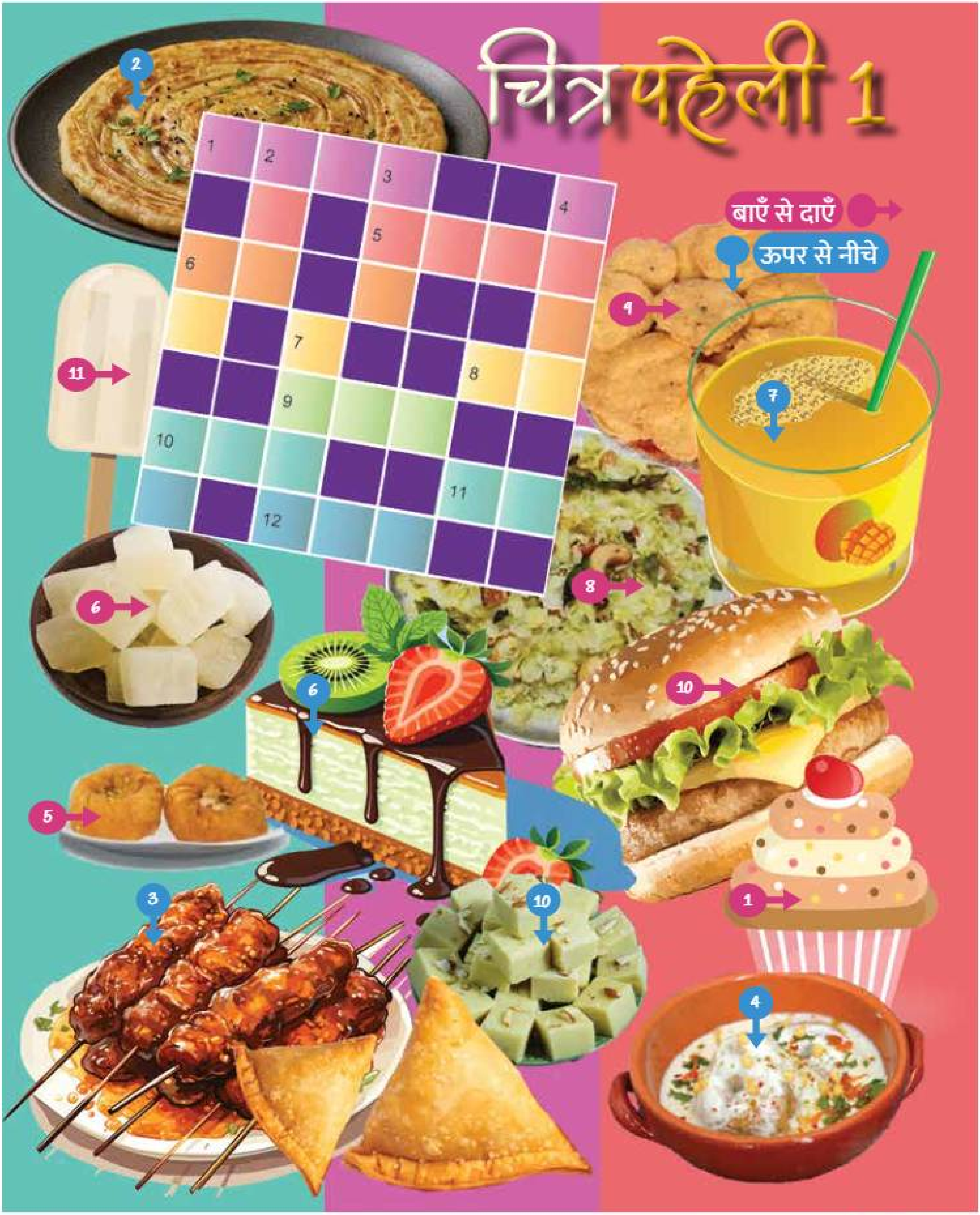

उठो, दामरी उठो!

पंकज साइकिया

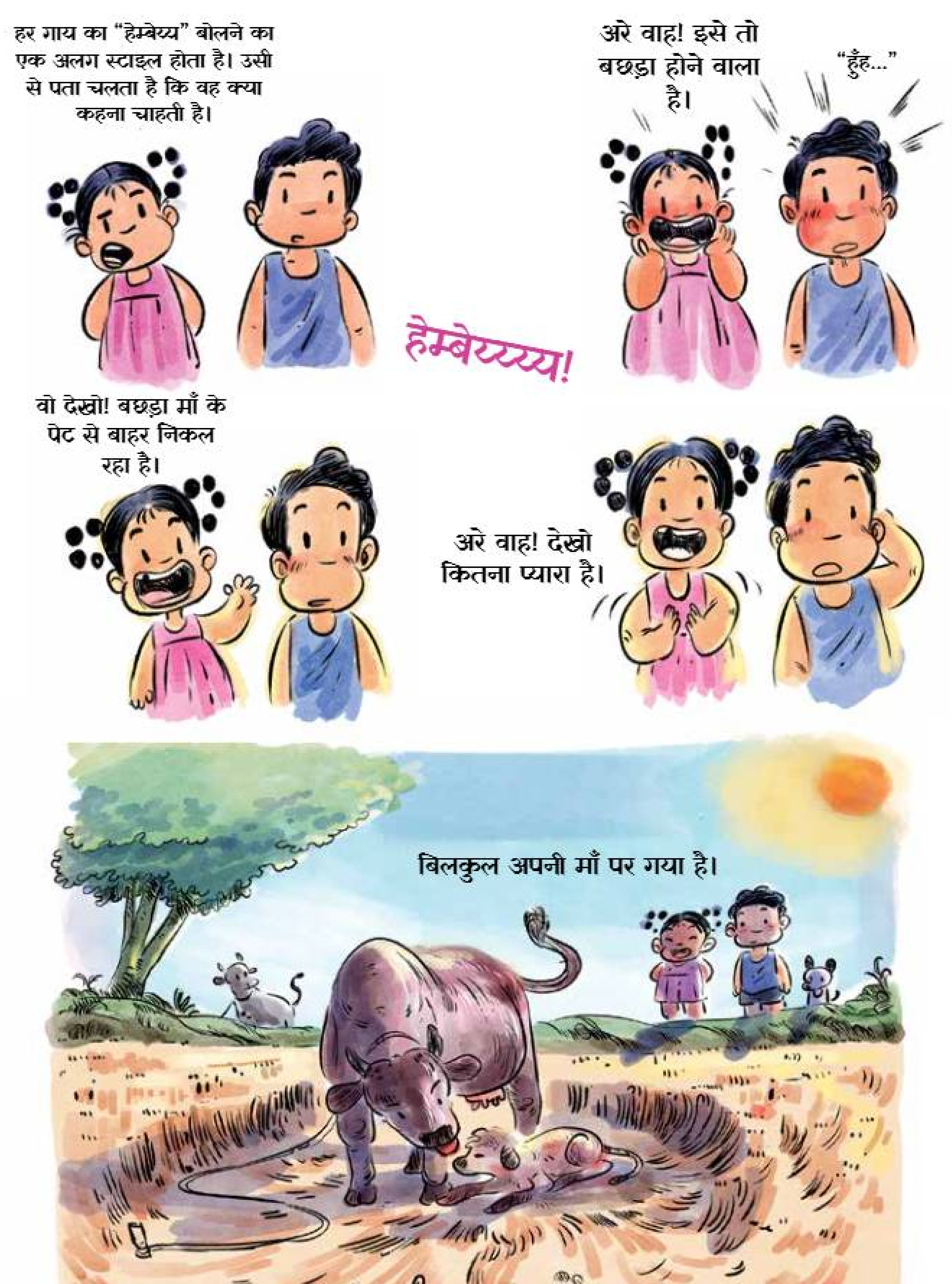
हर गाय का "हेम्बेय्य" बोलने का एक अलग स्टाइल होता है। उसी से पता चलता है कि वह क्या कहना चाहती है।
हेम्बेय्य्य्य!
अरे वाह! इसे तो बछड़ा होने वाला है।
"हुँह..."
वो देखो! बछड़ा माँ के पेट से बाहर निकल रहा है।
अरे वाह! देखो कितना प्यारा है।
बिलकुल अपनी माँ पर गया है।

वो उठने की
कोशिश कर रहा है।

शाम होने से पहले हमें उसे
घर ले जाना होगा।

चलो, उसे गाना गाकर उठाएँ—
उठो दामरी, उठो!
सूरज ढलने वाला है, उठो!

उठो दामरी, उठो!
सियार आने वाले हैं, उठो!
उठो दामरी, उठो!
फाटक बन्द होने वाला है, उठो!
उठो दामरी, उठो!

चाँद निकलने वाला है, उठो!
उठो दामरी, उठो!
माँ बुला रही है, उठो...

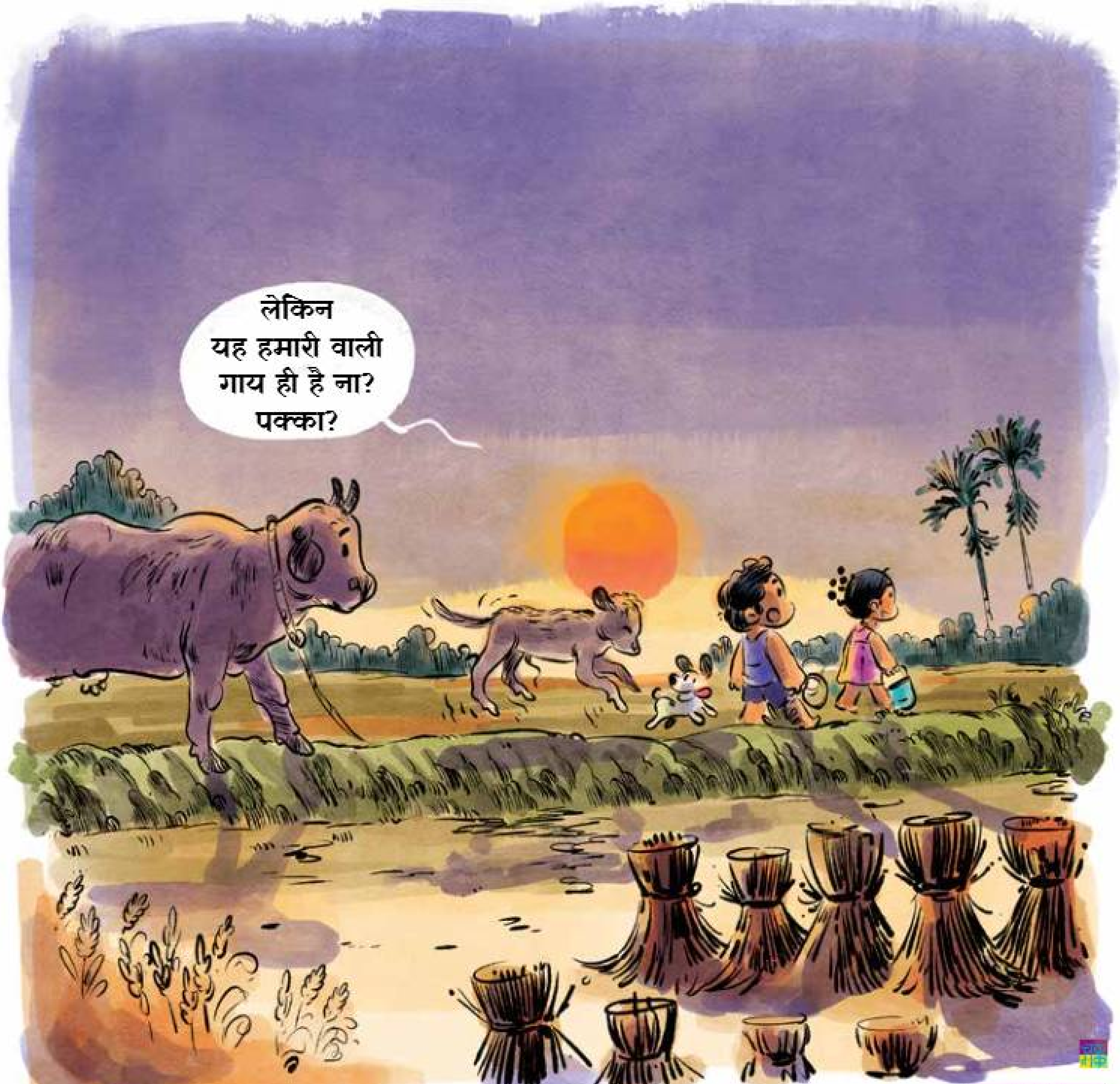
लेकिन यह हमारी वाली गाय ही है ना? पक्का?

शरारत

वीरेन्द्र दुबे
कला: विष्णु चिंचालकर

रोज़ शरारत
नई-नई
गिनते जाओ
कई-कई
कई-कई फिर
कई-कई

नारियल से कलाकारी

गुरुजी विष्णु चिंचालकर ने बच्चों की दुनिया में कला, खेल और प्रयोग की नई सम्भावनाएँ खोलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे केवल चित्रकार नहीं थे, बल्कि बच्चों की कल्पना और अभिव्यक्ति को नई दिशा देने वाले गुरुजी भी थे। *चकमक* के शुरुआती स्वरूप और दृश्य भाषा को गढ़ने में उनका खास योगदान रहा।

नारियल के खोल से बना ये मज़ेदार शिल्प उनकी बेमिसाल कल्पनाशीलता को दर्शाता है। तुम भी इनसे प्रेरणा लेकर अपने आसपास की आम चीज़ों में कुछ खास ढूँढो और उन्हें इस तरह प्रस्तुत करो कि जो तुमने देखा उसे दूसरे लोग भी देखें और आनन्द लें।

माथा पच्ची

1. स्पोर्ट्स डे पर स्कूल में दो रेस हुईं। कीर्ति, शमी, रिया और ज़ेनी ने इन दोनों रेस में अलग-अलग स्थान प्राप्त किए। नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं, उनके आधार पर बताओ कि किसने रेस में कौन सा स्थान पाया?

- दोनों रेस में कीर्ति, शमी से आगे रही और रिया, ज़ेनी से।
- पहली रेस में जो खिलाड़ी पहले स्थान पर आया था, दूसरी रेस में वही दूसरे स्थान पर रहा।
- दूसरी रेस रिया ने जीती और पहली रेस में ज़ेनी, शमी से आगे रही।
- कोई भी खिलाड़ी दोनों रेस में एक ही स्थान पर नहीं आया।

2. जस्सी ने टीना से पूछा, "कितने बज रहे हैं?" टीना ने कहा, "सुई के ऊपर सुई है और जितने बजने वाले हैं, उतने बजने में उतने ही मिनट बाकी हैं।" जस्सी को पता चल गया कि कितने बजे हैं। क्या तुम्हें भी पता चल गया?

3. एक व्यक्ति 500 रुपए कीमत की चीज़ें खरीदकर उन्हें 300 रुपए में बेचता था। कुछ ही महीनों बाद वह लखपति हो गया। यह कैसे हो सकता है?

4. एक किसान के पास 17 भेड़ें थीं। 9 को छोड़कर बाकी सब मर गईं। तो उसके पास कितनी भेड़ें बचीं?

5. ज़ोया अपने वकील से जेल में बात कर रही थी। दोनों इस बात से उदास थे कि जज ने जमानत देने से मना कर दिया था। थोड़ी देर बाद ज़ोया अपने घर वापिस चली गई। ये कैसे हो सकता है?

जवाब पेज 42-43 पर

शिकाकु

कविता तिवारी

सुडोकू तो तुमने हल किए ही होंगे, *चकमक* में और शायद अन्य किताबों या अखबारों में भी। सुडोकू जितनी ही मज़ेदार एक और जापानी पहेली है — शिकाकु। जापानी में शिकाकु का मतलब चार कोनों वाली आकृति (यानी चतुर्भुज) होता है।

शिकाकु ज्यामिति पर आधारित तर्क-पहेली है। जापानी में इसे *शिकाकु नि करे* भी कहा जाता है, जिसका मतलब होता है आयतों में बाँटो। अमेरिका में इस पहेली को *पार्टिशन* के नाम से जाना जाता है।

इसमें ग्रिड के कुछ खानों में संख्याएँ लिखी होती हैं। तुम्हें पूरी ग्रिड को आयतों और वर्गों में बाँटना होता है। लेकिन इसके कुछ नियम हैं:

- हर आयत में केवल एक ही संख्या होनी चाहिए।
- लिखी गई संख्या बताती है कि उस आयत में कुल कितने खाने होंगे।
- ग्रिड का कोई भी खाना खाली नहीं छूटना चाहिए।
- कोई भी दो आयत आपस में ओवरलैप नहीं करने चाहिए।

जापान में ऐसी तर्क-पहेलियाँ बहुत लोकप्रिय हैं। लोग इन्हें मनोरंजन और दिमागी कसरत के लिए हल करते हैं। वहाँ पहेलियों की खास पत्रिकाएँ भी छपती हैं।

मान लो किसी किसान को अपने खेत को अलग-अलग आयताकार क्यारियों में बाँटना है और जिस क्यारी में जो संख्या लिखी है, उसमें उतने ही पेड़ लगाने हैं। शिकाकु में तुम यही करते हो, बस कागज़ पर।

एक शिकाकु पहेली लेकर इसे समझते हैं!

		8		
6		4		4
		3		

इस शिकाकु का हल कुछ इस तरह होगा:

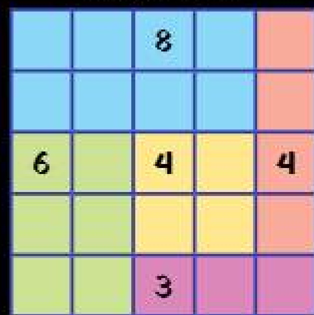

2			2	2
2			2	
				5
				2
2	2	4		

यहाँ तुम्हारे लिए दो शिकाकु पहेलियाँ दी गई हैं। इन्हें हल करके देखो। तुम चाहो तो हर आयत में अलग रंग भी भर सकते हो। हमें लिखना कि तुम्हें यह पहेली कैसी लगी।

2						5
				3		
4			4		3	
	2				4	2
3	2				8	2
			3	2		

जवाब पेज 42-43 पर

कोयल के गीत

क्या तुम जानते हो?

हमें लुभाने वाला और कवियों को प्रेरित करने वाला कोयल का गीत नर कोयल गाता है। मादा कोयल नहीं गाती। नर कोयल की तुलना में वह काफी शान्त रहती है और अक्सर किसी काम में लगी रहती है।

तुमने अपने आसपास कोयल को ज़रूर देखा होगा लेकिन मैं शर्त लगा सकती हूँ कि तुमने कभी उसका घोंसला नहीं देखा होगा। ऐसा इसलिए, क्योंकि कोयल घोंसला बनाते ही नहीं हैं।

मार्च से अगस्त तक के महीनों में जब मादा कोयल अण्डे देने के लिए तैयार हो जाती है तो वह कौए का ऐसा घोंसला ढूँढती है जिसमें कौए ने अण्डे दे रखे हों। जब घोंसले के मालिक कहीं दूर होते हैं तो कोयल उनके घोंसले में अपने एक या एक से अधिक अण्डे दे देती है। कोयल ना तो अपने घोंसले बनाते हैं, और ना ही अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। बेचारे कौए ही अनजाने में उनका यह सारा काम करते हैं।

Per Harald Olsen, CC BY-SA 3.0 <http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/>, via Wikimedia Commons

फील्ड डायरी

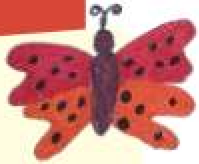

बाहर निकलकर सुनो कि कहीं कोयल के गाने की आवाज़ आ रही है क्या। आवाज़ के ज़रिए कोयल को ढूँढने की कोशिश करो। कोयल को ढूँढना इतना आसान नहीं होता क्योंकि अक्सर ये पेड़ की ऊँची डालियों पर पत्तियों के बीच छिपे बैठे रहते हैं। इस तरह यह काफी हद तक छिपे रहते हैं। अगर तुम्हें कोयल दिख जाए तो उसकी चमकती लाल आँखों को ज़रूर देखना।

जब कोयल तुम्हें दिख जाए तो दस मिनट तक ध्यान से उसे देखो और फिर अपनी डायरी में नोट करो कि:

- दस मिनट में नर कोयल कितनी बार गाता है?
- क्या उसके आसपास कोई मादा कोयल है?
- क्या कोयल के आसपास तुम्हें किसी कौए का घोंसला मिला?
- क्या तुमने किसी कौए को कोयल का पीछा करते देखा?
- कोयल की आवाज़ की नकल करो। क्या तुम्हारी आवाज़ सुनकर वो वापिस कूउउ ... की आवाज़ करता है?

हमें लिखकर बताओ कि तुमने क्या देखा।

काला पपीहा या चातक (पाइड कुकू)

NireshaJAththa, CC BY 4.0 <https://creativecommons.org/licenses/by/4.0>, via Wikimedia Commons

कोयल का परिवार

कोयल कुकू परिवार का पक्षी है। भारत में पाए जाने वाले दूसरे कुकू पक्षियों में पपीहा या ब्रेनफीवर बर्ड, देसी कुकू या फल पक्वा और काला पपीहा या चातक (मानसून का सूचक) शामिल हैं। ये सब और दुनिया भर में पाए जाने वाले अन्य सभी कुकू पक्षी अपने अण्डे दूसरे पक्षियों के घोंसलों में देते हैं। यानी कि इनके बच्चे किसी अन्य पक्षी की देखरेख में पलते हैं।

पपीहा या ब्रेनफीवर बर्ड (कॉमन हॉक कुकू)

Tisha Mukherjee, CC BY-SA 4.0 <https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0>, via Wikimedia Commons

देसी कुकू या फल पक्वा (इंडियन कुकू)

प्रतियोगिता

कहते हैं कि आम के पेड़ों पर कोयल पुकारने लगे तो समझ लो कि बसन्त आ गया। क्या तुम्हें लगता है कि यह बात सही है? अपने परिवार के बड़े लोगों व अपने दोस्तों से कोयल के बारे में प्रचलित कहानियों व मान्यताओं के बारे में पूछो। अपनी कहानी हमें भेजो और एक किताब जीतने का मौका पाओ।

प्रोजेक्टर

प्रभाकर डबराल

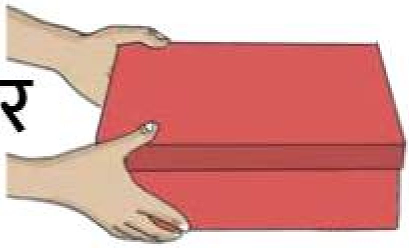

जुगाड़: स्मार्टफोन, गत्ते का आयताकार डिब्बा, मैग्नीफाइंग ग्लास, फेविकॉल, कटर या कैंची, काला रंग या मोटा काला कागज़ और ब्रुश

1. गत्ते का एक आयताकार डिब्बा लो, जिसकी चौड़ाई मैग्नीफाइंग ग्लास की चौड़ाई से थोड़ी ज़्यादा हो और जिसमें तुम्हारा स्मार्टफोन आ जाए। मैग्नीफाइंग ग्लास को बॉक्स के चौड़े हिस्से पर रखकर पेंसिल से ग्लास के चारों ओर एक गोला बनाओ।

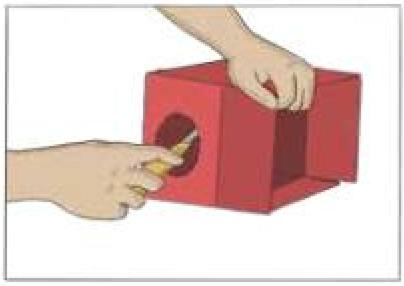

2. कटर या कैंची की मदद से गोले को काट लो। मैग्नीफाइंग ग्लास को छेद में डालो। ध्यान रखना कि ग्लास का उठा हुआ भाग बाहर की ओर हो। फेविकॉल में आटा मिला लो। फिर इस पुट्टी से मैग्नीफाइंग ग्लास को उस जगह पर चिपका लो। रोशनी को अन्दर आने से रोकने के लिए बॉक्स की सभी भीतरी दीवारों पर मोटा काला कागज़ चिपका दो या काले रंग से रंग लो।

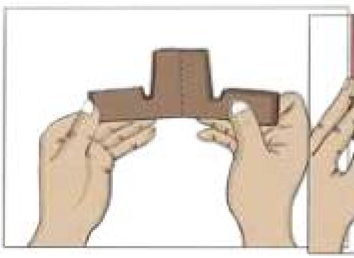

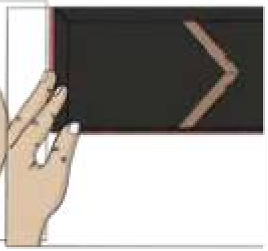

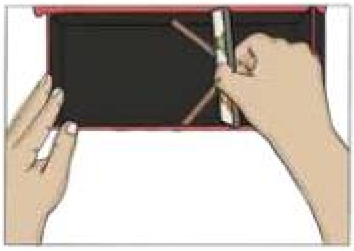

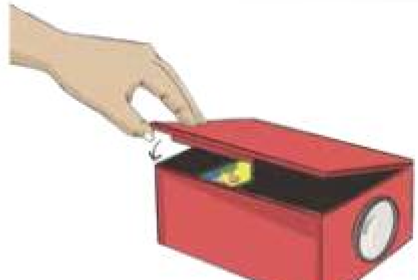

3. फोन को स्थिर रखने के लिए स्टैंड बनाओ। इसके लिए चित्र में दिखाई गई जैसी गत्ते की एक पट्टी काट लो। किसी भी अतिरिक्त रोशनी को अन्दर आने से रोकने के लिए ढक्कन सहित डिब्बे के सभी खुले हिस्सों को मोटे काले कागज़ (या पेंट) से ढँक लो। ऐसे किसी भी गैप या खुले स्थान को टेप से सील कर लो जहाँ से रोशनी अन्दर आ सकती है। अपने फोन को स्टैंड पर रखो। वीडियो चलाओ और बॉक्स पर ढक्कन लगा दो। चैक करो कि पिक्चर दीवार पर कैसी दिखाई देती है। यदि वह धुँधली है, तो फोन को ग्लास के करीब ले जाकर एडजस्ट करो। इसके लिए थोड़ा प्रयास करना पड़ेगा, लेकिन कुछ ही समय में तुम अपने होम प्रोजेक्टर का उपयोग कर पाओगे।

शुरुआत और अन्त

एक ज़ेन साधक से अपने गुरु का एक बहुत ही कीमती बर्तन टूट गया। जैसे ही उसे अपने गुरु के कदमों की आहट सुनाई दी उसने तुरन्त उस टूटे हुए बर्तन को अपने पीछे छिपा लिया। जब गुरु उसके पास पहुँचे तो उसने उनसे पूछा, "गुरुजी, मृत्यु क्यों होती है?"

"यह बहुत स्वाभाविक है।" गुरुजी बोले। "हर चीज़ की एक शुरुआत और अन्त होता है। हर चीज़ की एक उम्र होती है और उसके बाद उसका अन्त हो जाता है।"

शिष्य उस टूटे बर्तन के टुकड़ों को दिखाते हुए बोला, "आपके इस बर्तन के अन्त होने का समय आ गया।"

चित्र: कनक शशि अनिल

मिलो आय-आय से

आय-आय अफ्रीका के मैडागैस्कर द्वीप में पाए जाने वाला एक अनोखा जीव है। है तो ये प्राइमेट (नरवानर) समूह का सदस्य, लेकिन देखने और काम के तरीकों में ये अपने करीब के रिश्तेदारों से काफी अलग है। इसके बड़े कान, लम्बी उँगलियाँ और नुकीले नाखून इसकी खास पहचान हैं। आय-आय रात में सक्रिय रहता है। भोजन ढूँढने के लिए यह पेड़ों के तनों पर अपनी पतली उँगलियों से ठक-ठक करके तबले जैसा बजाता है। फिर अपने बड़े कानों से ध्यान से सुनता है। अगर उसे लगता है कि लकड़ी के भीतर कोई कीड़ा या इल्लियाँ हो सकती हैं, तो वह अपने मज़बूत दाँतों से लकड़ी को कुरेदता है। फिर अपनी लम्बी और लचीली बीच वाली उँगली अन्दर डालकर इल्लियों को निकाल लेता है। मज़ेदार बात यह है कि नरवानरों में आय-आय अकेला ऐसा जीव है जिसके काम का तरीका कठफोड़वों से मिलता-जुलता है। जैसे कठफोड़वा पेड़ को ठोककर कीड़े ढूँढता है, वैसे ही आय-आय भी अपनी उँगलियों और कानों की मदद से भोजन खोजता है।

भाग - 22

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

आर एस रेश्नू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

मत्स्याक्षी या कंचरी
(Sessile Joyweed)

वैज्ञानिक नाम:
ऑल्टर्नैन्थेरा सैसिलिस
Alternanthera sessilis

मूल: पहले माना जाता था कि यह चीन और दक्षिण व दक्षिण-पूर्वी एशिया का मूल निवासी है। लेकिन हालिया अध्ययनों से संकेत मिलता है कि यह दक्षिण अमेरिका का मूल निवासी है।

कैसे पहुँचा:
इस बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

मत्स्याक्षी एक औषधीय पौधा है। यह बहुत सूखी जगहों से लेकर मौसमी जलभराव वाली मिट्टी तक कई तरह के वातावरण में उग सकता है। तेज़ी से बढ़ने वाला यह बारहमासी पौधा एक मीटर तक ऊँचा हो सकता है। इसका तना बेलनाकार और रोएँदार होता है। तने ज़मीन पर फैले होते हैं, जिनसे सीधी शाखाएँ निकलती हैं। तने की गाँठों से नई जड़ें भी निकल सकती हैं।

मत्स्याक्षी की पत्तियाँ एक-दूसरे के आमने-सामने लगी होती हैं। इनमें डण्ठल छोटा या नहीं ही होता है। इसकी पत्तियाँ लम्बी और सँकरी होती हैं। ये 0.3 से 1 सेंटीमीटर चौड़ी और 0.6 से 5 सेंटीमीटर लम्बी हो सकती हैं। इसके फूल चमकीले, चाँदी जैसे सफेद से लेकर बैंगनी रंग तक के होते हैं। फूल घने गुच्छों में उस जगह खिलते हैं, जहाँ पत्ती तने से जुड़ी होती है।

इसके बीज छोटे 0.3 से 1 मिलीमीटर तक के और डिस्क जैसी आकृति वाले होते हैं। इनका रंग गहरा भूरा-काला होता है। एक पौधे से लगभग 2000 बीज पैदा होते हैं जो हवा या पानी द्वारा फैलते हैं। यह पौधा बीजों के साथ-साथ तने के टुकड़ों से भी दुबारा उग सकता है।

असर

मत्स्याक्षी नदियों, नालों और जलाशयों के किनारे उग सकता है। यह खेतों और चारागाहों में खरपतवार के रूप में भी फैल सकता है। नम क्षेत्रों में इसके तने आपस में मिलकर एक ही तरह के पौधों की घनी परत बना लेते हैं। इससे

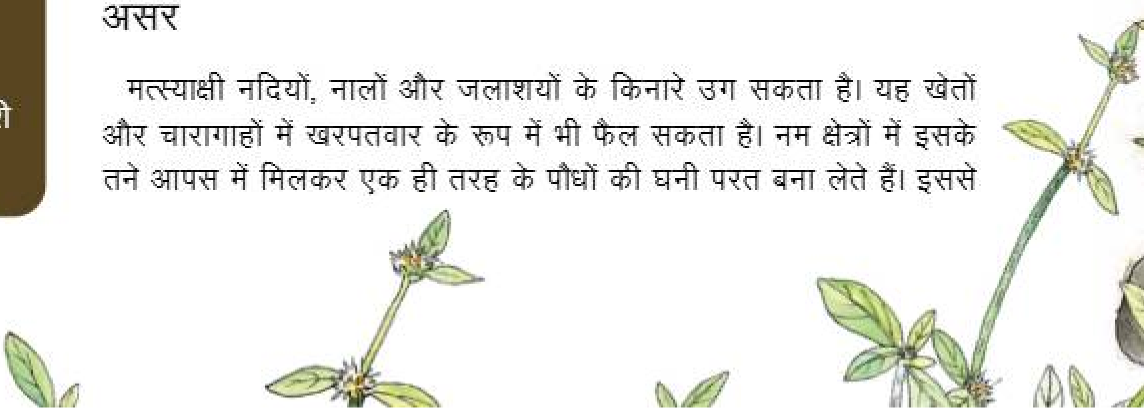

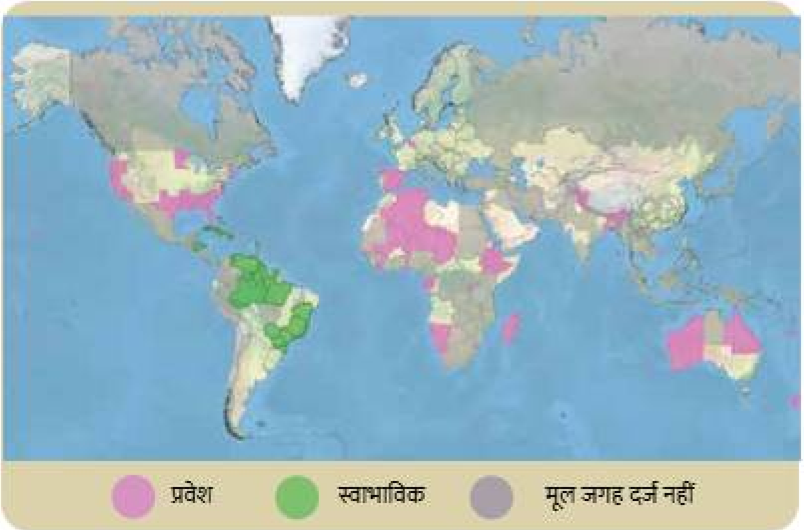

*हालाँकि CABI (2023) से प्राप्त इस नक्शे में दिखाया नहीं गया है, लेकिन प्रायद्वीपीय भारत में इसे आक्रामक एलियन पौधे के तौर पर जाना जाता है।

दूसरे पौधे वहाँ पनप नहीं पाते। कई बार यह खेतों तक पानी पहुँचाने वाले नहरों और नालियों को भी जाम कर देता है। खेती की ज़मीन में फैलकर यह फसल की पैदावार कम कर देता है। यह फसलों में लगने वाले कई कीटों के लिए वैकल्पिक मेज़बान का काम करता है। इनमें जड़ों को नुकसान पहुँचाने वाले नेमाटोड जैसे *मेलाइडोगाइन इनकोग्निटा* और *प्रैटिलेंकस कॉफिए* के साथ-साथ कसावा मिलिबग (*फेनैकॉकस मैनिहोटाय*) भी शामिल हैं।

बन्दोबस्त

खेतों में इस पौधे को हटाने का सबसे असरदार तरीका हाथ से निराई करना है। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के कुछ हिस्सों में इसे पत्तेदार सब्ज़ी, ज़मीन ढँकने वाले पौधे या चारे के तौर पर इस्तेमाल करके भी नियंत्रित किया जाता है। दुनिया के कुछ हिस्सों में इसे नियंत्रित करने के लिए शाकनाशियों (जैसे कि एमिट्रोल और 2,4-D) का भी उपयोग किया जाता है।

पृथ्वी को बचा सकता है विशाल चुम्बक

वैज्ञानिकों को लम्बे समय से यह चिन्ता रही है कि सूरज की परिक्रमा करते हुए पृथ्वी कहीं किसी क्षुद्रग्रह (एस्टोराइड) से न टकरा जाए। 2032 में ऐसा होने की थोड़ी सम्भावना है। पहले वैज्ञानिकों का विचार था कि ऐसे क्षुद्रग्रह को किसी मिसाइल जैसी चीज़ से मारकर अन्तरिक्ष में ही तोड़ दिया जाए। लेकिन अब वैज्ञानिक एक नया तरीका सोच रहे हैं। इस तरीके में परमाणु ऊर्जा से चलने वाले एक अन्तरिक्ष यान पर 20 मीटर का चुम्बक लगाने की योजना है। क्षुद्रग्रह आम तौर पर कई छोटे-छोटे पत्थरों का समूह होता है। ऐसे में यह चुम्बक इन छोटे पत्थरों को आकर्षित कर सकता है। इससे क्षुद्रग्रह का आकार और भार बदल जाएगा। और इससे उसका रास्ता भी थोड़ा बदल सकता है। यह बदलाव उसे पृथ्वी से दूर ले जा सकता है। फिलहाल यह एक प्रस्ताव है, लेकिन वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि समय रहते इस पर काम किया जाए तो पृथ्वी को सम्भावित टक्कर से बचाया जा सकता है।

क्यों क्यों

मैं उल्लू बनता क्योंकि उल्लू बहुत होशियार माने जाते हैं। और यह भी कि वे बहुत तेज़ नज़र वाले होते हैं। और मुझे लगता है कि मेरे पास उल्लू की खूबियाँ हैं।

रेयांश गुप्ता, पाँचवीं, हेरिटेज एक्सपीरियंशल लर्निंग स्कूल, गुरुग्राम, सेक्टर 62, हरियाणा

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:
यदि तुम्हें इन्सान के बदले और कुछ भी बनने का मौका मिले तो तुम क्या बनना चाहोगे, और क्यों?

इस सवाल के लिए तुम्हारे बहुत सारे दिलचस्प जवाब मिले। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। इसके कुछ अन्य जवाब हम अगले अंक यानी जुलाई में भी प्रकाशित करेंगे।

अगस्त अंक का सवाल है:

जाड़े में देर रात तक बाहर रखी लोहे की कुर्सी लकड़ी की कुर्सी से अधिक ठण्डी लगती है। उनका तापमान तो बराबर होता है, फिर यह अन्तर क्यों?

तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक
एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

चित्र: रेयांश गुप्ता, पाँचवीं, हेरिटेज एक्सपीरियंशल लर्निंग स्कूल, गुरुग्राम, सेक्टर 62, हरियाणा

मैं बादल बनना चाहती हूँ। फिर मैं सबको धूप से बचाती। बादल कभी-कभी कुछ नए आकार में भी आते हैं तो बच्चे उन्हें देखकर बहुत खुश होते हैं। बादल अचानक काले हो जाते हैं तो फिर बारिश आने लगती है। फिर सभी बच्चे उदास होकर अपने-अपने घर चले जाते हैं।

आरती, छठवीं, हैप्पी चिल्ड्रन्स लाइब्रेरी, सीम, नैनीताल, उत्तराखण्ड

मैं समय बनना चाहूँगा क्योंकि समय सबसे बलवान होता है। सभी के जीवन की शुरुआत समय से होती है और अन्त भी समय से होता है। मतलब कोई भी चीज़ समय से शुरू होकर समय में ही खतम होती है। मैं समय बनकर लोगों को यह बताऊँगा कि समय का एक-एक पल कीमती है और हमेशा इसका सदुपयोग करना चाहिए। इस पूरी दुनिया में सभी को अच्छा समय चाहिए, चाहे वह इन्सान हो या जानवर। सभी अपने अच्छे समय के लिए रोते हैं। लेकिन जो नहीं रोता, जिसे अच्छा समय नहीं चाहिए होता वह केवल और केवल समय है। समय को कोई फर्क नहीं पड़ता कि समय किसके लिए अच्छा है, और किसके लिए बुरा।

मोहम्मद जीशान, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, लोधमा, कुनकुरी, छत्तीसगढ़

मैं AI (रोबोट) बनना चाहूँगी। रोबोट बनकर मैं दुनिया की सारी समस्याओं का निवारण करना चाहूँगी। अपनी कृत्रिम बुद्धिमत्ता से मैं मरीज़ों का झट से इलाज करूँगी। बच्चों को पढ़ाई में मदद करूँगी। मुख्यत: ये रोबोट बनकर मैं मानव के कल्याण और विकास के लिए काम करूँगी।

ईश्वरी औटी, आठवीं, सावित्रीबाई फुले अँग्रेज़ी माध्यम विद्यालय, मोशी, पुणे, महाराष्ट्र

मैं एक जिन्न बनूँगा। यह पढ़कर आप लोग सोचेंगे कि अलाउद्दीन के जैसा चिराग वाला जिन्न। लेकिन नहीं, मैं ऐसा जिन्न नहीं बनना चाहता जिसका कोई मालिक हो। मैं ऐसा जिन्न बनना चाहता हूँ जो आज़ाद हो और जो स्वार्थी नहीं हो। जिन्न बनकर मैं गरीबों की मदद करूँगा क्योंकि जब मैं गरीबों को और सड़क पर कचड़ा चुनने वाले छोटे-छोटे बच्चों को देखता हूँ तो मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। इसलिए जिन्न बनकर मैं गरीब बच्चों को अच्छे-अच्छे पकवान और अशर्फियाँ दूँगा ताकि वह कचड़ा नहीं चुनें और अच्छा जीवन जिएँ।

उन गरीब और मेहनती किसानों की मदद करूँगा जो धूप में अपना पसीना बहाकर काम करते हैं। मैं उनके कामों को पलभर में कर दूँगा। जिस हिसाब से वह काम करते हैं मैं तो कहूँगा कि सबसे अधिक रुपया-पैसा उन्हें ही मिलना चाहिए क्योंकि पूरी दुनिया में सबसे अधिक मज़दूरी किसान करते हैं। मैं जिन्न बनकर इन्हें कभी काम ही नहीं करने दूँ मेरा दिल यही कहता है। ज़िन्दगी भर गरीब और मज़दूर की मदद करता रहूँ।

मो. इक़बाल, किलकारी बिहार बाल-भवन, दरभंगा, बिहार

मैं बाज़ बनूँगी। वो बहुत ऊँचा उड़ता है और खुद ही छोटे-छोटे जानवरों को मारकर खा जाता है। जब बारिश होती है तो सारे पंछी अपने घोंसले में चले जाते हैं। पर बाज़ अलग है। वो बादलों को चीरते हुए आगे बढ़ता जाता है। वो किसी से नहीं डरता। इसीलिए मुझे बाज़ बनना है।

अंशिका यादव, आठवीं, लोकमित्र शिक्षा केन्द्र, सनिका, मऊ, रायबरेली, उत्तर प्रदेश

क्यों क्यों

मैं व्हेल मछली बनना चाहूँगी। इससे मुझे धरती पर सबसे बड़ा जीव होने का गौरव भी प्राप्त होगा और जब मैं मर जाऊँगी तो हज़ारों-लाखों मछलियों को भोजन भी मिलेगा।

रोशनी राजवाड़े, आठवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़

चित्र: आरती चौहान, चौथी, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे अमरूद खाना बहुत पसन्द है। मेरे खेत में अमरुद का पेड़ लगा है। उसमें बहुत फल लगते हैं पर वे बहुत ऊँचाई पर होते हैं। मैं उन्हें तोड़ नहीं पाती हूँ। मैं पेड़ पर नहीं चढ़ पाती हूँ। इसलिए मैं तोता बनना चाहती हूँ। यदि मैं तोता होती तो मन भरकर रोज़ अमरुद खाती और बहुत मज़ा आता।

प्रिया वर्मा, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मैं हवा बनना चाहूँगी। फिर मैं अपनी मनमर्ज़ी से कहीं भी पहुँच जाऊँगी और हर जगह को महसूस कर पाऊँगी। जहाँ कहीं भी बारिश की ज़रूरत होगी तो मैं तेज हवा बनकर बादलों को उस जगह ले जाकर बरसवाऊँगी। और मैं चाहूँगी कि मैं कभी भी खतम न होऊँ क्योंकि मेरे खतम होते ही दुनिया भी खतम हो जाएगी।

रिया, बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

मैं नदी बनना चाहूँगी। तब मैं इन्सानों के लिए पानी दूँगी और उनकी ज़रूरत पूरी करूँगी। जैसे खेतों में पानी डालना, भगवान पर जल चढ़ाना। और फिर तब मेरा पानी सब के लिए होगा।

मानवी, सातवीं, हैप्पी चिल्ड्रन लाइब्रेरी, सीम, नैनीताल, उत्तराखण्ड

यदि मुझे इन्सान के बदले और कुछ बनने का मौका मिले तो मैं इन्सान ही बनना चाहता हूँ क्योंकि इन्सान से अच्छा कुछ नहीं। मैं एक अच्छा इन्सान बनकर सबकी मदद करूँगा।

देव यादव, आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

मैं बिल्ली का बच्चा बनना चाहता हूँ, क्योंकि बिल्ली का बच्चा बहुत प्यारा और नटखट होता है। बिल्ली कई जगह घूमती रहती है और उसे हर जगह की जानकारी रहती है। उसकी सुनने की क्षमता बहुत अच्छी होती है। बिल्लियाँ कई प्रकार की होती हैं। उनकी आँखें बहुत सुन्दर होती हैं और उनका रंग भी अलग-अलग होता है। इसलिए मैं बिल्ली बनना चाहता हूँ।

तरुण, नौवीं, इन्द्रधनुष समूह, दिगन्तर स्कूल, भावगढ़, जयपुर, राजस्थान

इन्सान के बदले मैं भगवान होता। किसी का भी एक्सीडेंट होता तो मैं उसे बचाता। दूसरों के लिए अच्छा सोचता। गरीब को अमीर बनाता। घमण्डी लोगों को सबक सिखाता। अच्छा स्कूल और अच्छा हॉस्पिटल बनवाता। किसान लोगों की फसल अच्छी करवाता। सबके लिए घर बनवाता और सबको एक अच्छी ज़िन्दगी देता।

निलेश, चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला घुरवाबुड़ा, सीतापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

चित्र: आरूशी एस पी, नौवीं, रमणा विद्यालय, शोलिंगनूर, चेन्नई, तमिलनाडु

अगर मुझे इन्सान के बदले कुछ और बनने का मौका मिले, तो मैं चाँद बनूँगी ताकि मुझ पर भी लिखी जाएँ कविताएँ। लोग मुझे सबसे सुन्दर और सबसे खूबसूरत कहें। साथ ही लोग खुद की तुलना मुझसे करें और मुझे श्रेष्ठ कहें। मैं भले ही सूरज से रोशनी लूँ लेकिन तारीफ मेरी चाँदनी की हो। मेरे नहीं आने पर सारा जग सूना लगे, जैसे आसमान में कुछ है ही नहीं। इसीलिए मैं एक चाँद बनना चाहूँगी।

सोनम शांडिल्य, ग्यारहवीं, किलकारी बिहार बाल-भवन, दरभंगा, बिहार

मैं एक किताब बनना चाहूँगा। मुझे लगता है कि एक किताब का जीवन बहुत ही दिलचस्प होता है क्योंकि वह कभी अकेली नहीं होती। एक किताब बनकर मैं दुनिया भर का ज्ञान और मजेदार कहानियाँ अपने अन्दर रख सकता हूँ। मुझे यह सोचकर बहुत अच्छा लगता है कि मैं सालों तक लाइब्रेरी में रहूँगा और अलग-अलग उम्र के लोग मुझे पढ़ेंगे। जब कोई बच्चा बोर हो रहा होगा, तो मैं उसे अपनी कहानियों के जरिए एक नई दुनिया की सैर कराऊँगा। एक किताब होने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि मैं कभी बूढ़ा नहीं होऊँगा। इन्सान तो चले जाते हैं लेकिन किताब की बातें हमेशा याद रखी जाती हैं। मैं किसी-किसी का अच्छा दोस्त बन सकता हूँ और उन्हें नई चीजें सिखा सकता हूँ।

अर्जुन, नौवीं, रमणा विद्यालय, शोलिंगनूर, चेन्नई, तमिलनाडु

माथापच्ची

फटाफट बताओ

एक कटोरी में दो रंग पानी
बूझो भाई बूझो रानी

हरी टोपी, लाल कमीज़
अन्दर भरे काले बीज।

वो क्या है जिसका मुँह
तो है पर वो बोलती नहीं,
पेट है पर खाती नहीं?

ऐसा क्या है जिसे डूबते
हुए देखने पर भी कोई
बचाने नहीं जाता?

कौन-से बटन को
तुम खोल नहीं
सकते?

6. ‘वार’ शब्द का सम्बन्ध ‘दिन’ से भी है और ‘हमला करने’ से भी। नीचे दी गई शब्दों की हरेक जोड़ी के लिए तुम्हें ऐसा ही एक शब्द लिखना है जिसका सम्बन्ध दोनों शब्दों से हो:

फुटबॉल, आकृति

समस्या, किसान

फूल, लड़ाई

आग, समुद्र

संगीत, पानी

बाल, पहाड़

7. दिए गए टुकड़ों को जोड़कर **H** की आकृति बनाना है। कैसे करोगे?

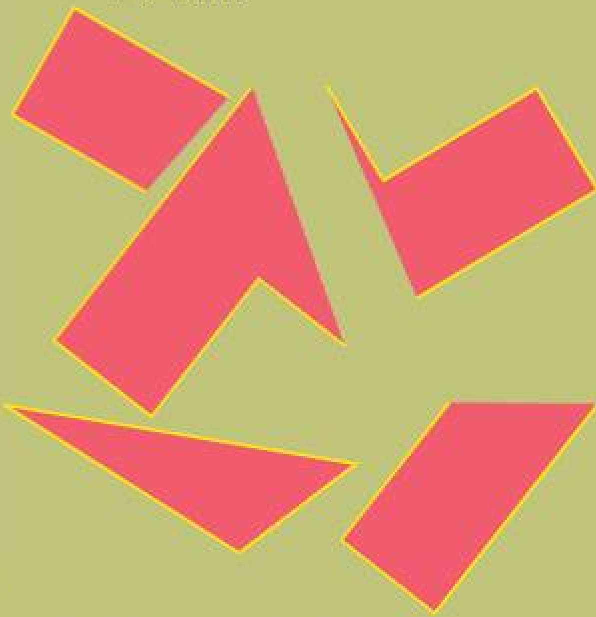

8. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग बिल्ली आनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी बिल्लियाँ आएँगी?

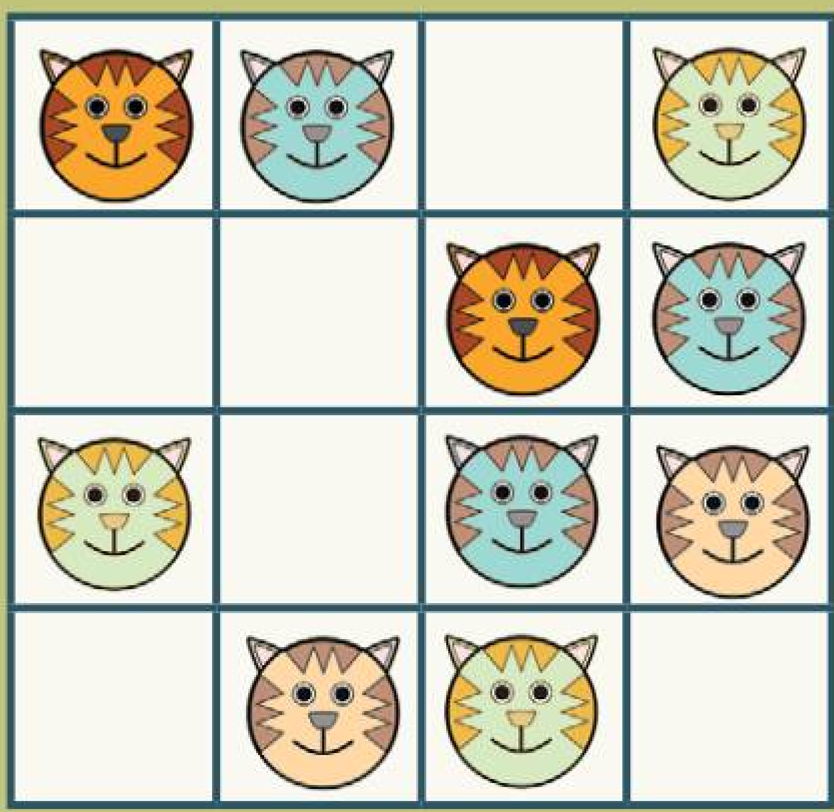

9. रात - रानी - पानी - पाला - आला

यहाँ हम हर बारी में एक-एक अक्षर बदलकर ‘रात’ शब्द से ‘आला’ शब्द तक पहुँचे हैं। इसी तरह एक-एक अक्षर बदलते हुए तुम्हें ‘शिमला’ शब्द से ‘कचरा' शब्द तक पहुँचना है, और ऐसा तुम्हें कम से कम बारी में करना है।

10.

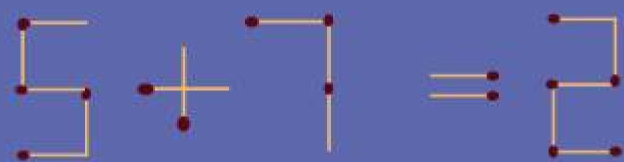

केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही करो।

11. दिए गए वाक्यों में दूध से बनी कुछ चीज़ों के नाम छिपे हुए हैं। ज़रा ढूँढो तो।

अचार बड़ी बुआ को बहुत पसन्द है।

करेले की सब्जी में स्वाद ही नहीं था।

मैंने गमछा छत पर सुखाने डाल दिया।

कंघी मुझे मिली ही नहीं।

कप नीरज लानेवाला है।

सोहा आम लाई है।

12. 4 सीधी रेखाओं के ज़रिए इन सभी बिन्दुओं को जोड़ना है, पर ऐसा तुम्हें एक लगातार रेखा बनाते हुए और अपने पेन या पेंसिल को कागज़ से उठाए बिना करना है।

13. 100 से छोटी संख्या जिसे 9 से भाग दो तो 1 शेष बचता है और 4 से भाग दो तो शून्य। कौन-सी संख्या है ये?

14. दी गई ग्रिड में गर्मी के मौसम में इस्तेमाल होने वाली कई सारी चीज़ों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

सु	पा	पं	मा	जा	नीं	बू	पा	नी
टा	कू	फं	खा	ब	फं	का	गो	ला
ही	ल	स्सी	पि	सू	ती	क	प	ड़े
त	र	बू	ज़	रे	का	क	क	ड़ी
उ	स्त	ला	टो	आ	इ	स	क्री	म
ए	सी	का	पी	लो	पा	न	जौ	ट
प	गो	खी	ग	म	छा	स्क्री	का	का
ना	ला	टा	सि	पा	छ	न	कु	ल्फी
ख	र	बू	जा	ग	न्ने	का	र	स

जवाब पेज 42-43 पर

मोबाइल फोन स्टैंड

जुगाड़:
पुराने अखबार, गत्ता, कैंची, फेविकोल,
पेंसिल, स्केल, पेपर कटर, झाड़ू की सींक

रक्षिता सैनी

ई 30 सेमी लम्बा और 9 सेमी चौड़ा एक गत्ता लो। पेंसिल की मदद से उस पर कुछ लाइनें खींचो — एक 2.2 सेमी की दूरी पर, दूसरी 4.4 सेमी पर, तीसरी 16.4 सेमी पर और चौथी 22.3 सेमी पर। अब पेपर कटर की उल्टी तरफ से इन लाइनों पर हल्का चीरा लगा लो।

गत्ते को एक तरफ से मोड़कर त्रिकोण का आकार दो। अब त्रिकोण से अगली लाइन तक गत्ते पर अखबार चिपका दो।

अखबार की 6 स्ट्रॉ बनाओ और उन्हें एक-एक करके गत्ते पर चिपकाओ। ध्यान रखना हर दो स्ट्रॉ के बीच लगभग एक स्ट्रॉ जितना गैप हो। अब गत्ते के बचे हुए सिरे को मोड़ लो। यह सिरा स्ट्रॉ के बीच में आसानी से फँस जाना चाहिए। हो गया तुम्हारा मोबाइल फोन स्टैंड तैयार।
अलग-अलग स्ट्रॉ के बीच फँसाकर तुम अपने फोन को अलग-अलग कोण पर रख सकते हो।

शहरों में घोंसला बनाते पक्षी

जितेश शेल्के

दोपहर का समय था। मैं ऑफिस से घर जल्दी लौट आया था। गर्मी बहुत थी। इसलिए मैं सीधे बालकनी में गया ताकि कूलर में पानी भर सकूँ। वहीं वॉशिंग मशीन भी रखी थी। सुबह जब मैं घर से निकला था तब उस मशीन पर कुछ नहीं था। लेकिन दोपहर तक वहाँ सूखी टहनियों का छोटा-सा ढेर जमा हो चुका था। मैंने टहनियों को नहीं छेड़ा। उत्सुकता थी कि आखिर यह सब किसकी करामात है।

अगली सुबह जब मैं घर से निकला तो मैंने देखा कि वहाँ एक सफेद अण्डा रखा था और उसके पास एक कबूतर बैठा था। मैं समझ गया कि यह वॉशिंग मशीन अब किसी का घर बन चुकी है।

ध्यान से देखो तो तुम पाओगे कि शहरों में रहने वाले पक्षी लगातार हमारे आसपास की चीज़ों को नए ढंग से इस्तेमाल करना सीख रहे हैं। गौरैया और मैना जैसे पक्षी अक्सर छज्जों, पुराने मीटर बॉक्स या ट्यूबलाइट के ऊपर घोंसला बना लेते हैं। कई बार वे दीवारों की दरारों और बोर्ड के पीछे की जगहों का भी उपयोग करते हैं। अबाबील अक्सर पुलों के नीचे मिट्टी से कटोरे जैसे घोंसले बनाती है। कभी-कभी तोते भी इमारतों की छोटी दरारों का उपयोग करते हैं। और कबूतर तो कूलर, पानी की टंकी और बालकनी के कोनों को भी अपना घर बना लेते हैं। वूली स्टॉर्क जैसे कई अन्य पक्षी भी अब बड़े-बड़े मोबाइल टॉवरों जैसी जगहों का उपयोग घोंसला बनाने के लिए करने लगे हैं।

पक्षियों के घोंसले खोजो

अपने घर, मोहल्ले या स्कूल में ध्यान से देखो। क्या तुम्हें इमारतों, मशीनों या इन्सान द्वारा बनाई गई अन्य चीज़ों पर पक्षियों के घोंसले दिखाई देते हैं? अपनी कॉपी में इन बातों को नोट करो:

पक्षी का नाम	घोंसला कहाँ देखा? कब देखा?	घोंसला किन-किन चीज़ों से बना था?

ध्यान रखना कि घोंसलों को थोड़ा दूर से ही देखना और पक्षियों को परेशान नहीं करना। ना ही उनके घोंसले को छूना।

हो सकता है तुम्हारी सूची में कुछ बहुत अनोखी जगहें जुड़ जाएँ। अपनी कॉपी में बनाए नोट हमें ज़रूर भेजना। यह भी लिखना कि तुम्हें क्या लगता है, पक्षियों ने ये जगहें क्यों चुनी होंगी?

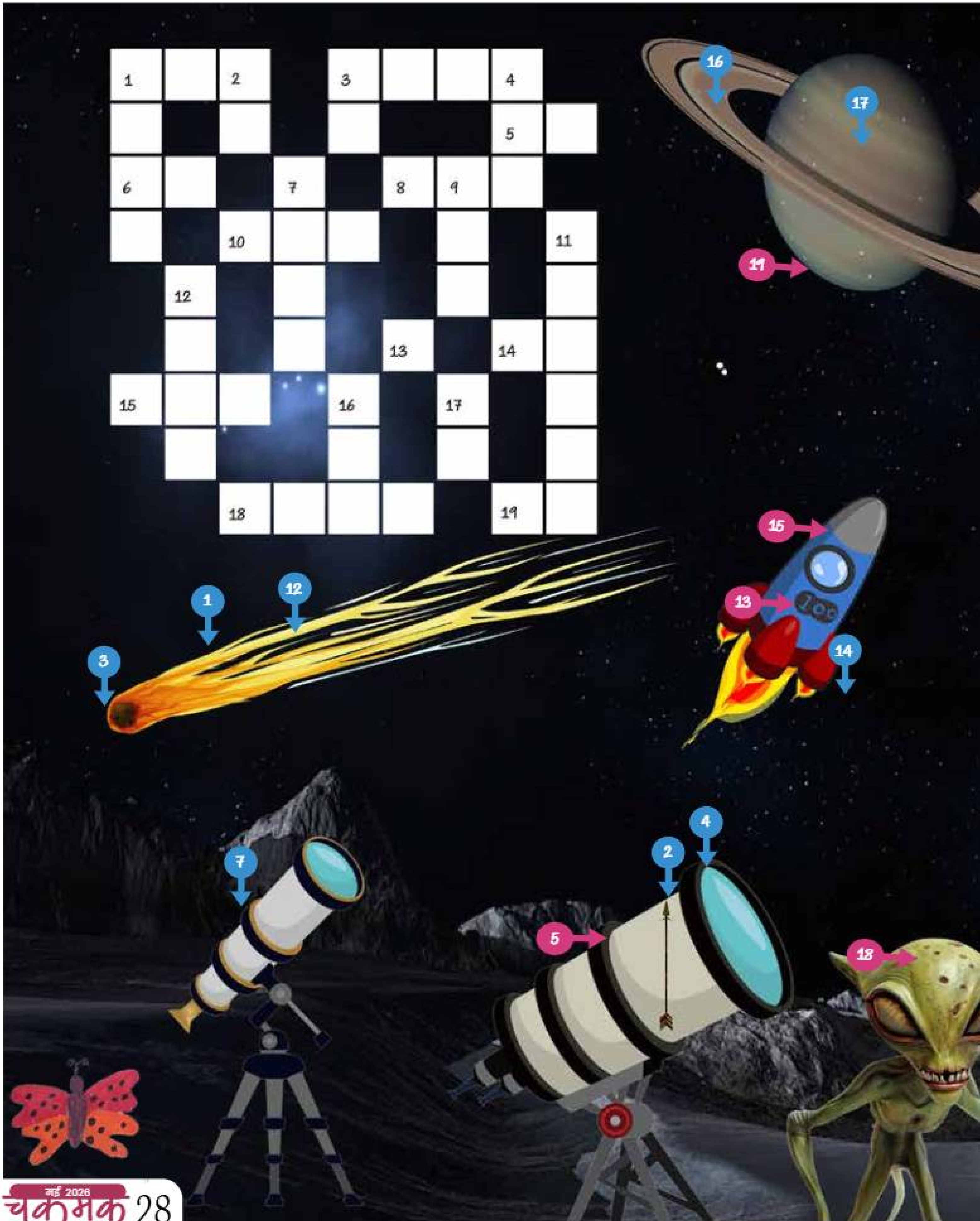

चित्र पहेली 2

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

सुडोकू 97

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

4		9				1	8	
	8	2			1	4	6	3
	1	6		4		5		7
9		4			6			
	6				3			
		7						1
		1						6
		3	1		4	8	5	9
6	9	5	3	2	8			

जवाब पेज 42-43 पर

तुम भी बनाओ

लोमड़ी

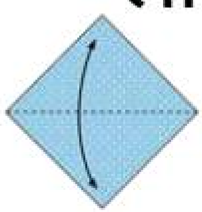

एक चौकोर कागज़ को तिरछा रखकर आधे में मोड़ो और फिर खोल लो।

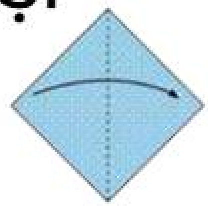

अब दूसरे कोने से भी इसी तरह मोड़ो।

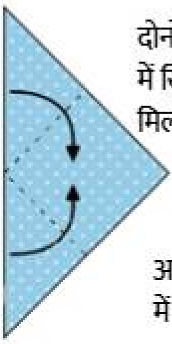

दोनों किनारों को बीच में खिंची लाइन से मिलाओ।

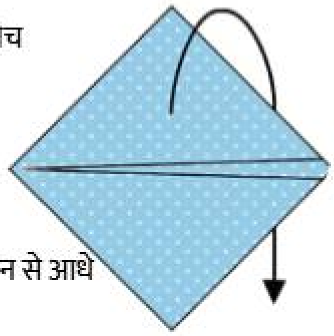

अब बीच की लाइन से आधे में मोड़ लो।

कोने में जो सबसे पहली पत्ती है उसे उठाओ। फिर बीच की पत्ती को चित्र में दिखाए तरीके से चपटा कर दो।

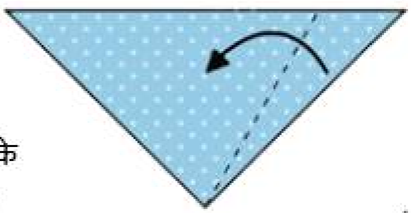

अब चित्र में दिखाए गए तरीके से अपनी बनाई आकृति को सीधा कर दो।

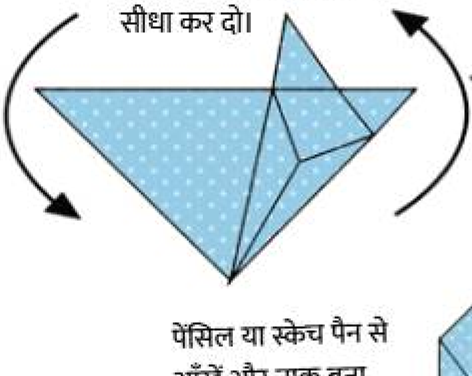

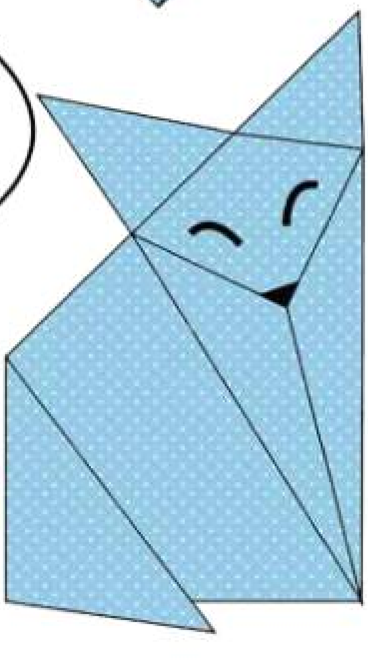

पेंसिल या स्केच पैन से आँखें और नाक बना लो और हो गई तैयार तुम्हारी लोमड़ी!

15.

दी गई ग्रिड में कुछ जानवरों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

चू	गि	ल	ह	री	क	नी	ति	ल
र	हा	थी	लो	ची	त	ल	भे	क
ने	व	ला	म	छ	ली	गा	ड़ि	ड़
तें	म	क	ड़ी	ख	प	य	या	ब
सा	दु	छु	ने	व	च्च	ख	बा	ग्घा
ही	सू	आ	के	बं	द	र	स	घ
हि	अ	भा	प	क	घो	गो	साँ	ड़ि
शे	र	ट	लू	री	ड़ा	श	भ	या
क	छु	ण	डा	य	ना	सो	र	ल

माथापच्ची

16.

सुबह के पाँच बजे हैं। तुम सो रहे हो। अचानक दरवाज़े की घण्टी बजती है। तुम्हारे अंकल-आंटी अपने बच्चों के साथ आए हैं। वो तुम्हारे साथ ही नाश्ता करना चाहते हैं और इसलिए जैम की बोतल, ब्रेड का पैकेट, शहद, जूस और दूध की बोतल साथ में लाए हैं। तो तुम सबसे पहले क्या खोलोगे?

17.

सभी खाली जगहों में एक ही अंक आएगा, कौन-सा?

$$2[\ ] \times [\ ] = 12[\ ]$$

18.

खाली जगहों में जोड़-घटाना, गुणा-भाग के चिह्नों का इस्तेमाल करके समीकरण को सही करो।

$$(7 _ 7) _ (7 _ 3) = 28$$

19.

अगर 1=5, 2=10, 3=15, 4=20 हो तो 5 कितना?

20.

खाली जगह में कौन-सी संख्या आएगी?

11 × 11 = 4

12 × 12 = 9

13 × 13 = 16

14 × 14 = ?

21.

मिस्टर व्हाइट, मिस्टर ब्लैक और मिस्टर ब्राउन एक समारोह में मिले। तभी मिस्टर व्हाइट ने कहा, “तुमने ध्यान दिया कि हम में से किसी ने भी अपने नाम के रंग के जूते नहीं पहने हैं।” “हाँ तुम बिलकुल सही कह रहे हो,” काले रंग के जूते पहने व्यक्ति ने कहा। क्या इस बातचीत के आधार पर तुम बता सकते हो कि किसने कौन-से रंग के जूते पहने थे?

22.

क्रम से आने वाली तीन संख्याओं का जोड़ 93 है। तुम्हें पता है कौन-सी संख्याएँ हैं ये?

जवाब पेज 42-43 पर

इस चित्र में कितने हाथी हैं?

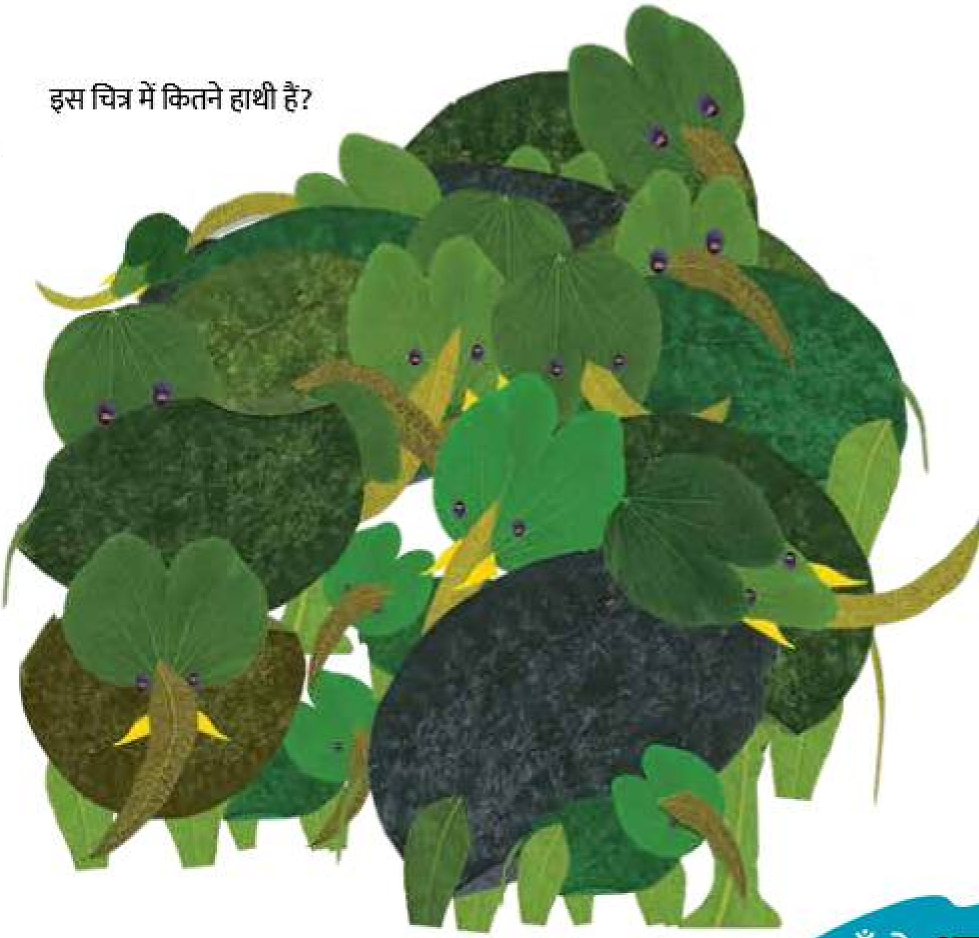

ढूँढो अन्तर

इस चित्र में छह से ज़्यादा अन्तर हैं, तुमने कितने ढूँढे?

चित्र: कनक शशि अनिल

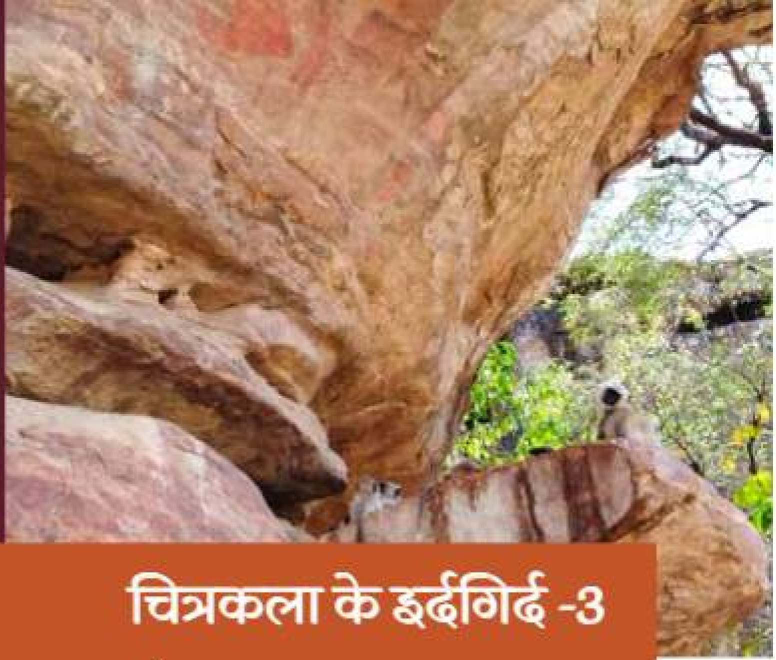

चित्रकला के इर्दगिर्द -3

सी.एन. सुब्रह्मण्यम्

क्या तुम्हारे घर के आसपास कोई घना जंगल है? वैसे तो आजकल घने जंगल बचे ही कहाँ हैं। अगर तुम्हारे घर के आसपास कोई जंगल है तो तुम कभी न कभी वहाँ महुआ या चिरोंजी बीनने या फिर ऐसे ही घूमने जरूर गए होगे।

नर्मदा नदी के दोनों तरफ विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत हैं। इनमें आज भी थोड़ा-सा घना जंगल बचा है।

मैं इन जंगलों में घूमता हूँ। लेकिन सिर्फ महुआ या अचार बीनने नहीं। इन घने जंगलों के बीच कहीं-कहीं ऐसी चट्टानें निकल आई हैं जिन पर बहुत पुराने चित्र बने हैं। ऐसे चित्रों को ढूँढने और देखने में मुझे बहुत मज़ा आता है।

तुमने भी देखा होगा कि छज्जों की तरह उभरी ये चट्टानें आँधी, धूप और बारिश में सिर छुपाने या आराम करने का साधन भी बन जाती है। आम तौर पर ऐसी ही जगहों की चट्टानों की दीवारों पर चित्र मिलते हैं।

इन चट्टानों के आसपास पत्थर से बने कई औज़ार मिट्टी में दबे मिलते हैं। इन औज़ारों का उपयोग हज़ारों वर्ष पहले रहने वाले हमारे पूर्वज करते थे। इनसे वे शिकार करते, मांस काटते, पेड़ की छाल साफ करते, लकड़ी काटते, जड़ खोदते थे। ऐसा लगता है कि इन्हीं लोगों ने चट्टानों पर ये चित्र बनाए हैं।

आम तौर पर चित्र तो रंग और ब्रश से बनाए जाते हैं। हज़ारों वर्ष पहले उनको ये सब कैसे मिले? भई रंग और ब्रश बनाना इतना मुश्किल काम तो नहीं है। तुम भी घर बैठे बिना कुछ खर्च किए इस तरह के रंग बना सकते हो और ब्रुश भी।

गेरू, पीली मिट्टी (रामरज), चूना और नील को अलग-अलग बारीक पीस लो। फिर इन्हें थोड़े पानी में अलग-अलग घोल लो। इनमें थोड़ा-सा गोंद भी मिला दो। इन रंगों को आपस में मिलाने पर कई अन्य रंग भी बन सकते हैं। जैसे नील और पीली मिट्टी मिलाने पर हल्का हरा रंग बनेगा।

ब्रुश बनाना भी आसान है। खजूर या छोटे पेड़ की टहनी तोड़कर उसके एक सिरे को कुचलकर ब्रश जैसा बना लो। बिलकुल वैसे ही जैसे घर में पुताई के लिए कूची बनाते हैं।

बस ऐसे ही हमारे पूर्वज भी रंग बनाते होंगे। गेरू, पीली मिट्टी और चूने के अलावा, ऐसा पत्थर मिल जाता था, जिसमें ताँबे की मात्रा अधिक हो। इसे पीसकर हरा रंग बनाया जाता था।

चट्टानों पर बने चित्र ज़्यादातर गेरुए रंग के होते हैं। इसका भी एक मज़ेदार कारण है। तुमने घर में देखा होगा कि कई बार टीन के पुराने डिब्बों में मिट्टी भरकर उन्हें गमले का रूप दे दिया जाता

है। उन्हें यदि किसी पत्थर/फर्शी पर लम्बे समय तक रखा जाए तो उनके नीचे जंग से लाल निशान बन जाता है। ऐसे निशान तुम्हें पानी से भरी लोहे की बालटी रखने की जगह पर मिल सकते हैं। वास्तव में डिब्बे या बालटी का लोहा, पानी और पत्थर के साथ क्रिया करके लोहे का ऑक्साइड बनाता है। इस निशान को धोकर मिटाने की चाहे जितनी कोशिश करें यह मिटता नहीं है।

चट्टानों पर बने गेरुए रंग के चित्रों में भी कुछ ऐसी ही बात है। गेरू में लोहा होता है जो पानी और चट्टान के साथ क्रिया करके चट्टान पर अमिट छाप छोड़ देता है। बाकी रंग भले ही धुलकर खतम हो जाएँ, गेरुए रंग के चित्र हमेशा बने रहते हैं।

अब देखते हैं कि इन चित्रों में क्या बनाया जाता था। ऐसा नहीं है कि वे लोग केवल जानवरों और मनुष्यों के चित्र ही बनाते थे। इसका प्रमाण है ओबेदुल्लागंज के पास बना ये चित्र। ये चित्र किस चीज़ का है? इसके पीछे क्या धारणा है, पक्के तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। मगर कुछ-कुछ अन्दाज़ा लगा सकते हैं।

ऐसा लगता है कि चित्र में ऊपर लहर वाली लाइनों से पानी को चित्रित किया

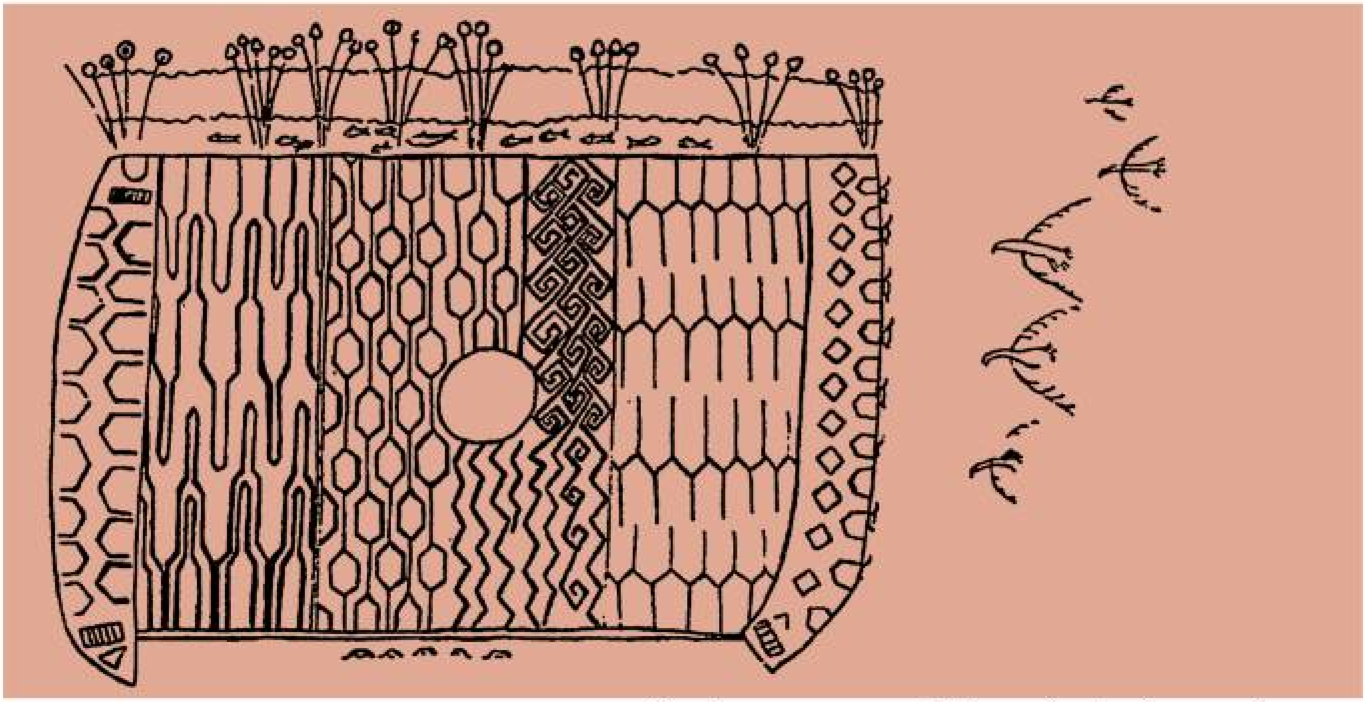

गया है, क्योंकि कुछ पौधे और मछलियाँ भी वहाँ दिखाई पड़ती हैं। दाईं तरफ तथा नीचे के किनारों में बतख जैसे पक्षी बने लगते हैं। दाईं तरफ उड़ते हुए पाँच पक्षी भी बने हैं। चित्र के बाकी हिस्सों में षटकोणीय आकारों वाले पैटर्न उभारे गए हैं।

इस चित्र से यह पता चलता है कि हमारे पूर्वज केवल अपने आसपास दिखाई देने वाली चीज़ों के बारे में ही नहीं सोचते थे, बल्कि अपनी सोच से बिलकुल नए आकारों को भी जन्म दे रहे थे।

बहता पानी, पौधों के बीच तैरती मछली, हवा में उड़ते पक्षी, ज़मीन पर चलते बतख और पैटर्न से भरा यह चित्र अपने आप में अनोखा है।

तुम भी जानो

ऑपरेशन के दौरान गरम हवा...

कुछ समय पहले ऑपरेशन थियेटर में काम करने वाली एक सहायक नर्स ने सर्जन से पूछा कि यदि ऑपरेशन करते समय मेडिकल टीम का कोई सदस्य पाद दे तो क्या इससे मरीज़ को कोई नुकसान हो सकता है? क्या पाद में ऐसे बैक्टीरिया होते हैं जिनसे मरीज़ को संक्रमण हो सकता है? इसका जवाब जानने के लिए डॉक्टर ने एक छोटा-सा प्रयोग किया। उन्होंने अपने एक सहकर्मी से 5 सेंटीमीटर की दूरी से दो पेट्री डिशों की ओर पादने के लिए कहा – एक बार पतलून पहनकर और एक बार बिना पतलून के। 24 घंटे बाद डॉक्टरों ने देखा कि उस पेट्री डिश में बैक्टीरिया पनप गए थे जिसमें बिना कपड़ों के पादा गया था। ये वही बैक्टीरिया थे जो आम तौर पर हमारी आँतों और त्वचा पर पाए जाते हैं। लेकिन दूसरी पेट्रीडिश में कोई बैक्टीरिया नहीं मिले। इस छोटे-से प्रयोग से पता चला कि कपड़े बैक्टीरिया को फैलने से रोकने में काफी असरदार हो सकते हैं।

तुम भी बनाओ

कनक शशि अनिल

पत्तों के स्टैम्प

जुगाड़: पत्ते, रंग, कोरे कागज़, ब्रुश, छोटी कटोरी या मग में पानी

अपने घर के आसपास से अलग-अलग पेड़-पौधों के पत्ते इकट्ठा कर लो।

अब ब्रुश को थोड़े-से पानी में डुबाकर गीला कर लो, फिर पत्ते के पिछले भाग में रंग पोत दो।

पत्ते के रंगवाले भाग को कोरे कागज़ पर रखो। इस पत्ते के ऊपर एक और कोरा कागज़ रखो और हाथ से अच्छी तरह दबाओ।

5 सैकण्ड बाद पहला कागज़ हटाओ और फिर धीरे-से पत्ते को हटाओ।

इस तरह अलग-अलग पत्तों की छपाई कर तुम अपनी डायरी के पन्नों या दोस्त को लिखे खत को सजा सकते हो।

23. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग स्टैम्प आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से स्टैम्प आएँगे?

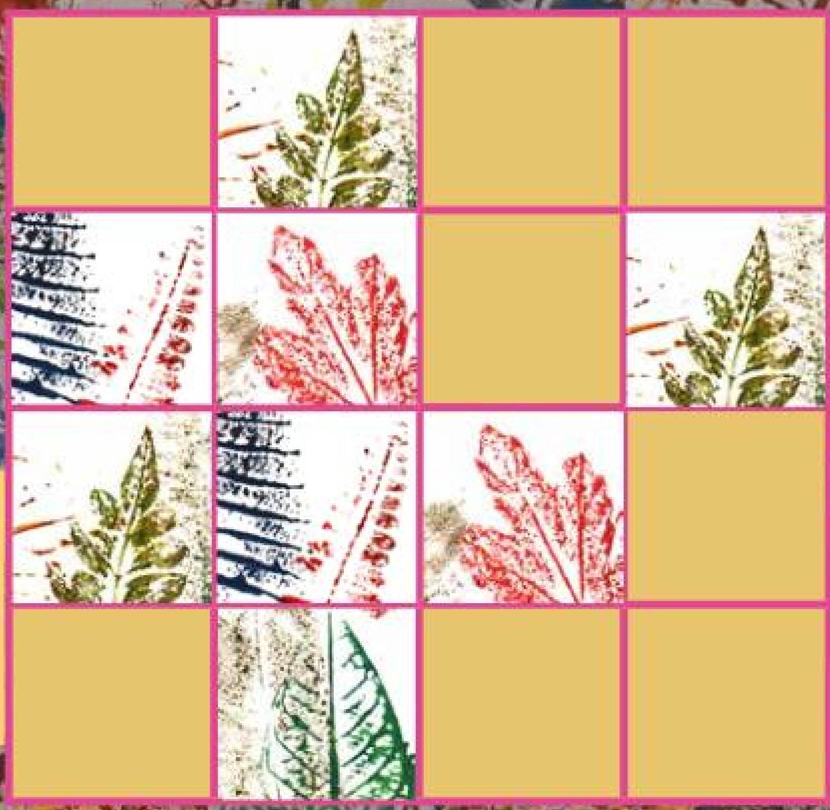

जवाब पेज 42-43 पर

मेरा पन्ना

कुल्फी का स्वाद

यश
नौवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

एक बार की बात है। मैं घर में अकेला था। मेरी बड़ी और छोटी दीदी मम्मी के साथ घासणी से घास काटने गई थी। मैं छोटा था, इसलिए मैं घर में था। गर्मी का महीना था और मुझे कुल्फी खाने का बहुत मन कर रहा था। दुकान घर से दूर थी और मेरे पास पैसे भी नहीं थे। इसलिए मैं ला भी नहीं सकता था। तभी मुझे याद आया कि मेरी दीदी ने तो अपनी गाय के दूध से कई बार कुल्फी बनाकर हमें खिलाई हैं। मैं फटाफट फ्रिज़ के पास गया। लेकिन घर का सारा दूध खत्म था।

तभी मेरे दिमाग में एक तूफानी आइडिया आया। मैं जल्दी से रसोई में गया और एक छोटा बर्तन लिया। फिर अपनी गौशाला में गया। मैंने मम्मी को गाय से दूध दुहते हुए देखा था। गाय से मुझे डर नहीं लगता था क्योंकि मैं जब भी उसकी गर्दन सहलाता वह चुपचाप खड़ी रहती थी। वह प्यार से मुझे चाटती भी थी। इसलिए मैंने हिम्मत करके उस बर्तन में जैसे-तैसे करके दूध निकाल लिया। और फिर दूध को उबालकर कुल्फी बनाई। कुल्फी खाकर इतना मज़ा आया कि क्या ही कहूँ उस स्वाद के बारे में!

शाम को मम्मी ने गाय को दुहा। गाय ने कम दूध दिया। मम्मी को समझ नहीं आ रहा था कि यह कैसे हो गया? गाय तो स्वस्थ थी। मज़े की बात ये हुई कि मम्मी को पता ही नहीं चला कि आज गाय ने दूध क्यों कम दिया है। मम्मी अपने में ही यह कहते हुए गौशाला ने निकल गईं कि आज इस बछड़े ने फिर से दूध पी लिया होगा।

आज भी जब उस दिन की बात याद आती है, तो कुल्फी की मिठास के साथ होंठों पर मुस्कान भी आ जाती है। उस दिन चुपके से कुल्फी मैंने खाई और बेचारा बछड़ा बिना कसूर के दोषी ठहरा दिया गया।

अम्मी का मन उछला

सानिया
पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय
चारुबेटा, खटीमा
ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

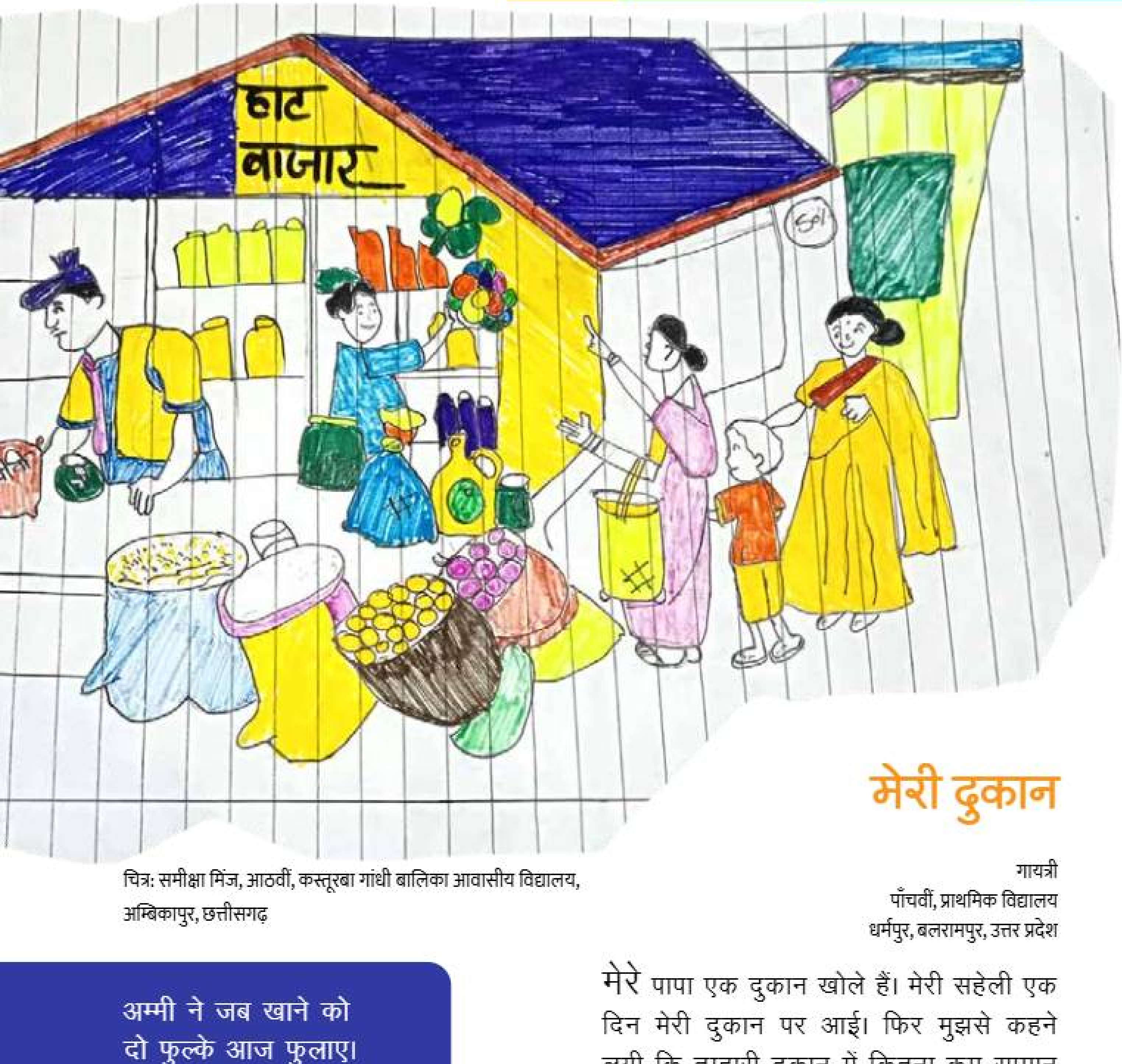

चित्र: समीक्षा मिंज, आठवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़

मेरी दुकान

गायत्री
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय
धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे पापा एक दुकान खोले हैं। मेरी सहेली एक दिन मेरी दुकान पर आई। फिर मुझसे कहने लगी कि तुम्हारी दुकान में कितना कम सामान है। मैं बोली, “मेरे गाँव में पहले सिर्फ मेरी ही दुकान थी। और कोई दुकान नहीं थी। तब लोग मेरी दुकान पर आते थे। पर अब मेरे गाँव में तीन दुकान हो गई हैं। इसलिए मेरी दुकान पर बहुत कम लोग आते हैं। इसी कारण मेरे पापा बहुत कम सामान लाते हैं।”

अम्मी ने जब खाने को
दो फुल्के आज फुलाए।
हम सब बच्चे दौड़े-दौड़े
खाना खाने आए।
खाना खाकर सबके मुँह से
वाह-वाह जब निकला।
खुश होकर अम्मी मुस्काईं
अम्मी का मन उछला।

मेरा पन्ना

कोलोंग नदी का प्रदूषण

गौतम कुमार पासवान
छठवीं, कथा कानन लाइब्रेरी
नगांव, असम

आज मैं आप लोगों को बताना चाहता हूँ वहाँ की नदी के बारे में, जहाँ मैं रहता हूँ। मैं असम के नगांव ज़िले में रहता हूँ। हमारे घर के पास जो नदी है, वह ब्रह्मपुत्र से निकलती है। वह नदी जब निकलती है तो बहुत साफ रहती है। लेकिन नगांव का सारा कचरा उसी में गिरता है। इतना कचरा जाता है कि नदी और उसका पानी पूरा काला पड़ गया है। लोग उसी में कपड़े धोते हैं। जिनका घर नदी के पास है, वे बर्तन भी वहीं धोते हैं।

लेट्रिन के टैंक भी नदी से जुड़े हैं। उनका सारा गन्दा पानी पाइप से नदी में गिरता है। इस तरह नगांव का सारा कचरा नदी में पहुँच जाता है और नदी लगातार प्रदूषित होती जा रही है।

जब मैं नगांव नया-नया आया था, तब मैं अपने पापा के साथ घूमने गया। हम नदी के पास गए और मैंने देखा कि एक चिड़िया उड़ते-उड़ते आई और नदी का पानी पीने लगी। कुछ ही मिनट बाद वह चिड़िया मर गई।

इससे आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि नदी का पानी कितना प्रदूषित हो गया है। सोचिए, मछलियाँ उसमें कैसे रहती होंगी! वे तो बहुत परेशानी झेल रही होंगी ना?

चित्र: लक्षिता, दूसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

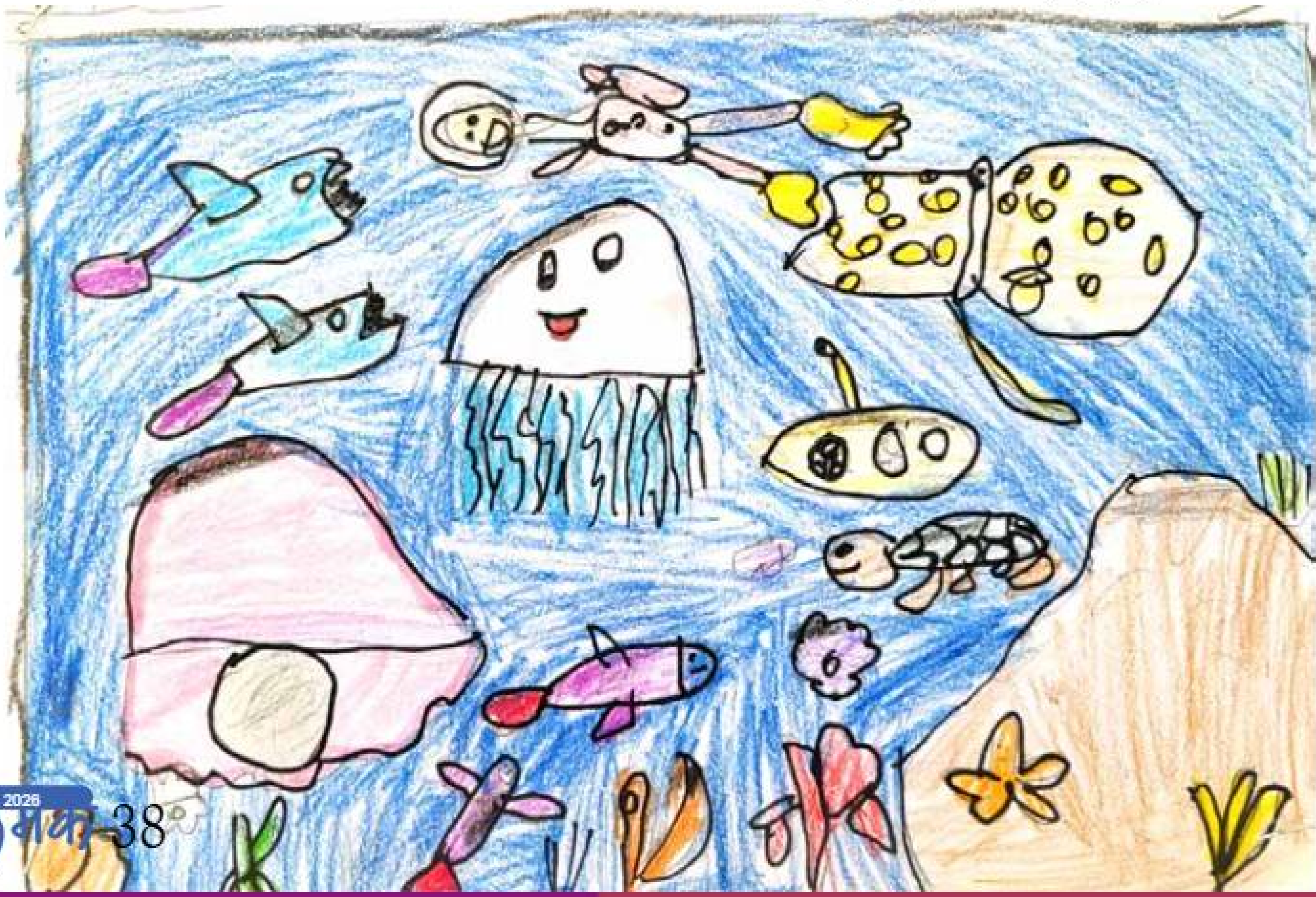

मस्त वाली शांति

चित्र: अंकुश कुमार,
छठवीं, परिवर्तन सेंटर,
ग्राम नारायणपुर,
सिवान, बिहार

मनस करन
पाँचवीं, ग्राम मिश्रौलिया
बस्ती, उत्तर प्रदेश

एक दिन मैं और पापा नानी के घर से आ रहे थे। हमारा नानी घर पास ही है। हमारे घर दीदी आ रही थीं तो हम लोग पास वाली दुकान पर गए। पापा बोले, "मैं पनीर ले आता हूँ। तब तक तुम मिर्ची ले आओ।" ऐसा बोलकर पापा चले गए पनीर लेने और मैं मिर्ची लेने। मैंने पूछा, "मिर्ची कैसी दी?" दुकानदार बोला, "30 रुपए की है।" मैंने बोला, "आती हूँ।"

पापा के पास 10 रुपए का नोट नहीं था तो उन्होंने मुझे 20-20 के 2 नोट दिए। फिर मैंने दुकानदार को पैसे दिए और उसने मिर्ची दी। मैंने बोला, "छुट्टा?" तो वो बोला, "40 का है।" जैसे ही पापा पनीर लेकर आए मैंने उन्हें सब बताया। पापा पूछे, "कितने का है भाई?" उसने बोला, "40 का।" फिर पापा बोले, "40 का तो है।" मैंने बोला, "पापा पहले 30 का बोला था।"

फिर पापा ने उसके बगल वाली आंटी से पूछा, "कितने का है?" वो बोलीं, "30 रुपए का।" फिर पापा का माथा गरम हो गया। फिर पापा उसको इतना डाँटे, इतना डाँटे कि क्या बताऊँ। फिर मुझे बहुत ही मस्त वाली शान्ति मिली।

काली दिवाली

रूपाली संजय बालपने
सातवीं, ज़िला परिषद जूनियर कॉलेज
भद्रावती, महाराष्ट्र

दीवाली का त्यौहार था। हम सब खुश थे। सारे गाँव में खुशी का माहौल था। सब लोग काम में मग्न थे। घर चकाचक होकर सज रहे थे। घर के सामने सुन्दर-सुन्दर रंगोली डाली हुई थीं। अचानक गाँव की मुख्य सड़क पर एक भयानक एक्सीडेंट हो गया।

सारा गाँव उस ओर दौड़ पड़ा। पति, पत्नी और उनके दो बच्चे कुचले गए थे। सड़क खून से लथपथ थी। गाँव के लोग उन्हें अस्पताल लेकर तो गए, पर कोई बच ना सका। सबके चेहरे पर उदासी छा गई। गाँव में मातम छा गया।

उस दिन गाँव में एक भी घर में दीपक नहीं जला।

उसकी याद आती है

उमैर
पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय
महराया, रुद्रपुर, उत्तराखण्ड

आज जब मैं सुबह उठा तो मैंने देखा कि मेरे छप्पर और आँगन में चिड़ियाँ बैठी थीं। मैंने उन्हें चावल डाले। जैसे ही मैं उनके पास जा रहा था तो वो मुझसे डर रही थीं और उड़ जा रही थीं। पहली बार मैंने अपने घर में इतनी चिड़ियाँ देखी थीं।

मेरे घर में एक शहतूत का पेड़ भी है। उस पर चिड़िया के बच्चे थे। एक बच्चे को तो बिल्ली ने खा लिया। मुझे बुरा तो बहुत लगा, लेकिन क्या करता। वो भी तो जानवर ही है ना। मुझे पशु-पक्षी से बहुत प्यार है। वो मुझे बहुत ज़्यादा अच्छे लगते हैं।

वैसे इस टाइम मेरे घर में दो भैंस हैं, दो मुर्गी के बच्चे हैं। वह मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। और अब मैं दो बिल्ली के बच्चे और लाऊँगा। वैसे तो मेरे घर में एक बिल्ली भी थी। लेकिन वो पता नहीं कहाँ चली गई।

चित्र: करण, पन्द्रह साल, अनुभूति - अ फ्री कम्युनिटी लाइब्रेरी, गुवाहाटी, असम

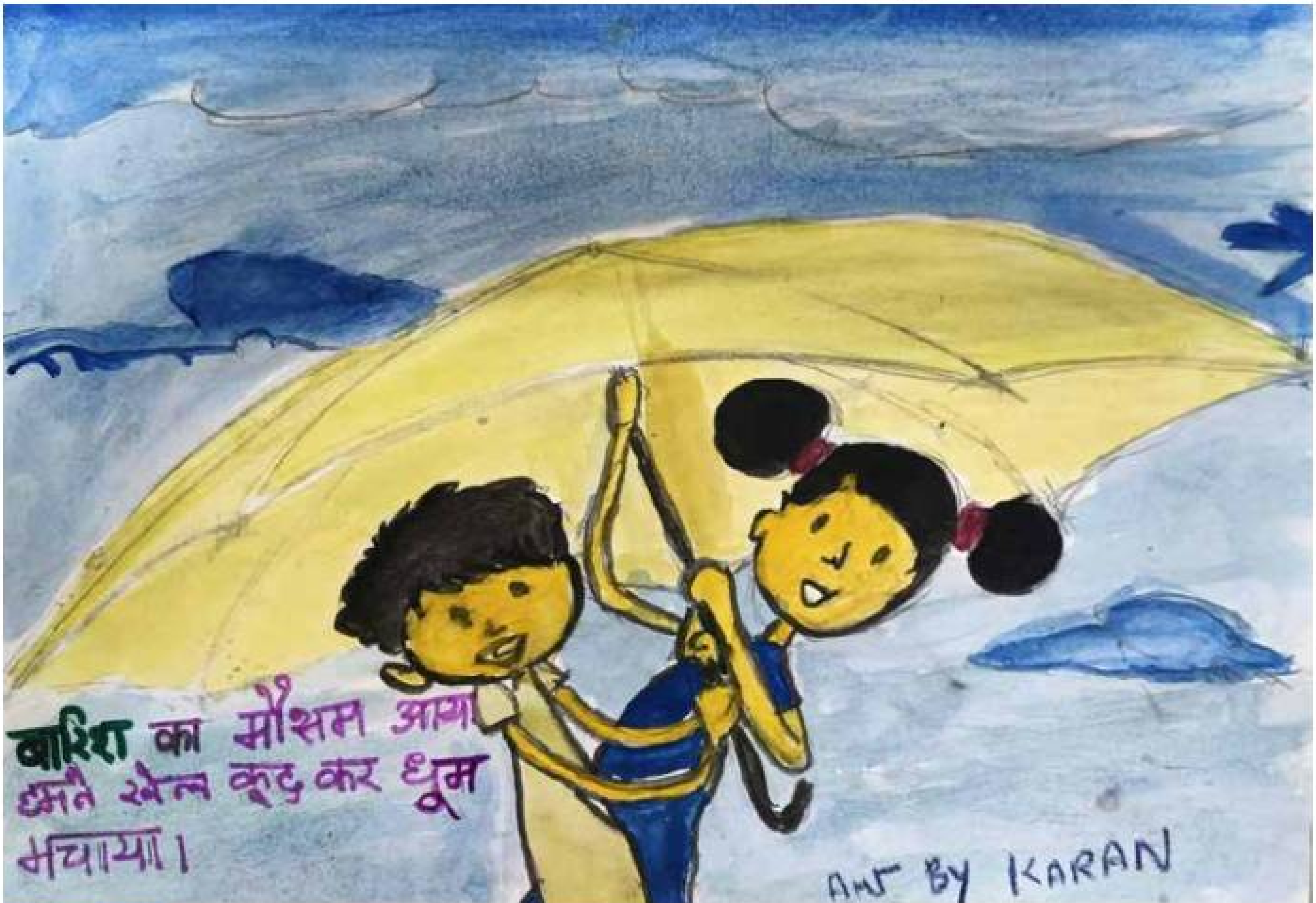

चित्र: राशनी केरकेट्टा, आठवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़

खास सहेलियाँ

प्रगति पटेल
छठवीं, एलिजियंस एकैडमी
कुक्षी, धार, मध्य प्रदेश

मेरी दो खास सहेलियाँ हैं। एक जो सबसे ज़्यादा मस्ती करती है। सबको चिढ़ाती रहती है और हँसाती भी है। और दूसरी जो मेरी हर बात को समझ लेती है। पर कभी वो भी थोड़ी चिड़चिड़ी-सी हो जाती है। और कभी-कभी उन दोनों के बीच में झगड़ा हो जाता है। और इस वजह से मैं उन दोनों के बीच में फँस जाती हूँ कि किसकी बात में हाँ कहूँ या ना कहूँ। फिर इस वजह से हम तीनों के बीच में झगड़ा हो जाता है। और फिर वापिस से हम तीनों सहेलियाँ बन जाती हैं। ये है हमारी खट्टी-मीठी, नोकझोंक भरी दोस्ती।

माथापच्ची

जवाब

2. दस बजने में दस मिनट कम।

3. क्योंकि पहले वो करोड़पति था।

4. सवाल में दिया ही है कि 9 को छोड़कर बाकी मर गई थीं। यानी कि 9 बचीं।

5. क्योंकि ज़ोया का वकील जेल में था।

6. गोल, हल, हार, जल, ताल, चोटी

9. इसके कई जवाब हो सकते हैं। एक यहाँ दिया गया है: शिमला, कमला, कमरा, कचरा

7.

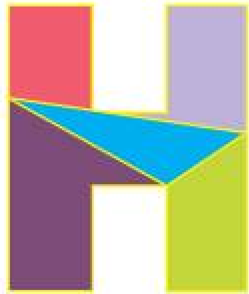

1. पहली रेस में:
रिया, ज़ेनी से आगे रही (संकेत 1) और ज़ेनी, समीर से आगे रही। यानी रिया, फिर ज़ेनी और फिर शमी। लेकिन दूसरी रेस रिया ने जीती थी (संकेत 3) और कोई भी खिलाड़ी दोनों रेस में एक ही स्थान पर नहीं आया (संकेत 4)। इसलिए रिया पहली रेस में प्रथम नहीं हो सकती। इसलिए पहली रेस की विजेता कीर्ति हुई। तो पहली रेस का क्रम होगा: कीर्ति, रिया, ज़ेन, शमी।
दूसरी रेस में:
रिया विजेता रही (संकेत 3), शमी फिर से चौथे स्थान पर नहीं आ सकता (संकेत 4) और कीर्ति, शमी से आगे रही (संकेत 1) और दूसरे स्थान पर आई (संकेत 2I) इसलिए शमी केवल तीसरे स्थान पर हो सकता है। तो दूसरी रेस का क्रम हुआ: रिया, कीर्ति, शमी, ज़ेनी।

10.

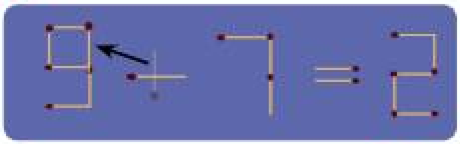

11. अचार बड़ी बुआ को बहुत पसन्द है।
करेले की सब्जी में स्वाद ही नहीं था।
मैंने गमछा छत पर सुखाने डाल दिया।
कंघी मुझे मिली ही नहीं।
कप नीरज लानेवाला है।
सोहा आम लाई है।

12.

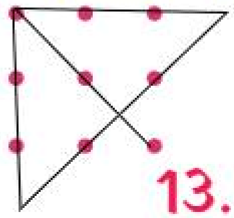

13. 27 और 64

तीलियों की तिकड़म

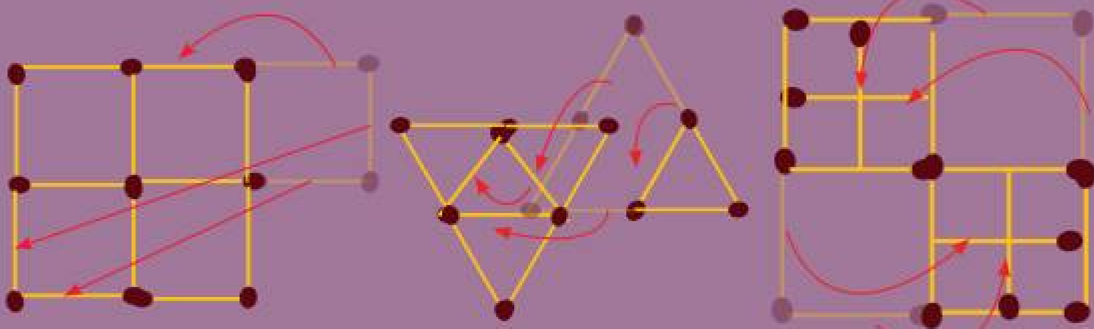

8.

23.

सुडोकू-97 का जवाब

4	7	9	6	3	5	1	8	2
5	8	2	7	9	1	4	6	3
3	1	6	8	4	2	5	9	7
9	5	4	2	1	6	3	7	8
1	6	8	4	7	3	9	2	5
2	3	7	5	8	9	6	4	1
8	4	1	9	5	7	2	3	6
7	2	3	1	6	4	8	5	9
6	9	5	3	2	8	7	1	4

14.

सु	पा	पं	मा	जा	नी	बू	पा	नी
रा	कू	फ	खा	ब	र्फ	का	गो	ला
ही	ल	स्सी	पि	सू	ती	क	प	ड़े
त	र	बू	ज़	रे	का	क	क	ड़ी
उ	स्त	ला	टो	आ	इ	स	क्री	म
ए	सी	का	पी	लो	पा	न	जौ	ट
प	गो	खी	ग	म	छा	स्क्री	का	का
ना	ला	रा	सि	पा	छ	न	कु	ल्फी
ख	र	बू	जा	ग	न्ने	का	र	स

15.

चू	गि	ल	ह	री	क	नी	ति	ल
र	हा	थी	लो	ची	त	ल	भे	क
ने	व	ला	म	छ	ली	गा	ड़ि	ड़
तें	म	क	ड़ी	ख	प	य	या	ब
सा	दु	छु	ने	व	च्च	ख	बा	ग्घा
ही	सू	आ	के	बं	द	र	स	घ
हि	भ	भा	प	क	घो	गो	साँ	ड़ि
शे	र	ट	लू	री	ड़ा	श	भ	या
क	छु	ण	डा	य	ना	सो	र	ल

16. दरवाज़ा

17. 25 × 5 = 125

18. (7 × 7) - (7 × 3) = 28

19. दिया है कि 1 = 5, तो 5 = 1 ही होगा ना।

20. इन संख्याओं में यह पैटर्न है:

11 × 11 = (1+1) × (1+1) = 2 × 2 = 4

12 × 12 = 9 = (1 + 2) × (1 + 2) = 3 × 3 = 9

13 × 13 = 16 = (1 + 3) × (1 + 3) = 4 × 4 = 16

इसलिए, 14 × 14 = (1 + 4) × (1 + 4) = 5 × 5 = 25

21. चूँकि किसी ने भी अपने नाम के रंग के जूते नहीं पहने थे तो ज़ाहिर है कि मिस्टर व्हाइट ने सफेद जूते नहीं पहने थे। उन्होंने काले जूते भी नहीं पहने थे क्योंकि काले जूते पहने हुए व्यक्ति ने उनकी बात को सही बताया था। यानी कि उन्होंने भूरे जूते पहने थे। मिस्टर ब्राउन ने काले और मिस्टर ब्लैक ने सफेद जूते पहने थे।

22.

मान लो कि संख्या x है। तो अगली दो संख्याएँ x + 1 और (x + 1) + 1 होंगी। दिया है:

x + x + 1 + (x + 1) + 1 = 93

3x + 3 = 93

3x = 93 - 3 = 90

x = 90 ÷ 3 = 30

तो संख्याएँ 30, 31 व 32 होंगी।

24.

इस अंक का आखिरी सवाल: आरूशी की बनाई यह तितली इस अंक में कितने पन्नों पर छपी है

शिकाकु

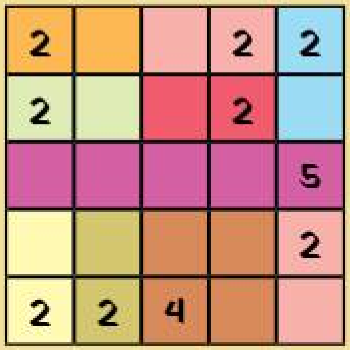

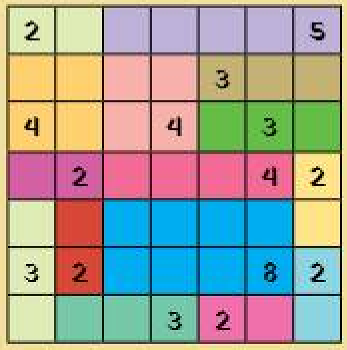

चित्रपहेली 1 का जवाब

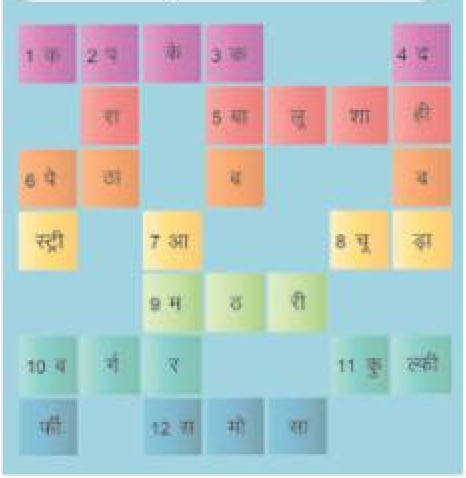

चित्रपहेली 2 का जवाब

चित्रपहेली 3 का जवाब

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

चित्र: कनक शशि अनिल

प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन